हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 6 जुलाई 2025

11 नौ की राष्ट्रव्यापी हड़ताल की तैयारियों को लेकर एकजुट हुए कर्मचारी

12 तीसरे दिन भूख हड़ताल पर रहे पंच, प्रशासन ने नहीं ली सुध

नागरिक अस्पताल के जन औषधि केंद्र की छत का प्लास्टर गिरा, भय का माहौल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जिला स्तरीय नागरिक अस्पताल का भवन लोक निर्माण विभाग द्वारा एक दशक पहले कंडम घोषित किया जा चुका है, लेकिन नया भवन तैयार नहीं होने के चलते अब भी पुराने कंडम भवन में ही अस्पताल को संचालित किया जा रहा है। इस कंडम भवन में चलाए जा रहे जन औषधि केंद्र की छत का प्लास्टर अचानक गिर पड़ा। इससे स्टाफ में डर का माहौल उत्पन्न हो गया। प्लास्टर भारी मात्रा में गिरने से वहां लगा पंखा भी क्षतिग्रस्त हो गया।

जानकारी मुताबिक प्रातःकाल को नागरिक अस्पताल भवन की सेवाएं सामान्य तौर चल रही थी। तभी प्रातः करीब नौ बजे अचानक जन औषधि केंद्र की छत से प्लास्टर भारी मात्रा में प्लास्टर आ गिरा। सौभाग्य की बात यह रही कि उस वक्त ज्यादा आवाजाही नहीं होने जहां प्लास्टर गिरा, वहां कोई मौजूद नहीं था। अन्यथा कोई हादसा भी हो सकता था, क्योंकि प्लास्टर भारी मात्रा में गिरा था। इससे वहां लगे सीलिंग फैन की पंखुड़ियां मुड़कर क्षतिग्रस्त हो गई।

अचानक से प्लास्टर गिरने व पंखा टूटने से अफरातफरी मच गई। प्लास्टर गिरने की सूचना पर स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने केंद्र का जायजा लिया। गौर हो कि नागरिक अस्पताल का पुराना भवन लगभग 50-60 पुराने भवन में चल रहा है तथा पीडब्ल्यूडी द्वारा इसे कंडम भी घोषित किया जा चुका है। सरकार द्वारा इसी परिसर में नए अस्पताल भवन को पांच साल से टेंडर दिया हुआ था, लेकिन वह 7 मंजिला 200 बैड का भवन बार-बार ढिलाई के कारण तैयार नहीं हो पाया, जिस कारण पुराने ठेकेदार का टेंडर रद कर दिया और अब नए टेंडर जारी करने की तैयारी चल रही है। जब तक यह नया भवन तैयार नहीं हो जाता, तब तक इस पुराने कंडम भवन में ही अस्पताल की सेवाएं चलती रहेंगी। इसी कारण इस पुराने भवन में अब तक सभी ओपीडी, जांच, ऑपरेशन, गायनी वार्ड आदि किए जा रहे हैं। इतना ही नहीं, भवन की तीसरी मंजिल पर बारिश के समय छत टपकती रहती है। इससे भी भवन की नींव कमजोर हो रही है।

यहां बात दें कि करीब दो साल पहले नागरिक अस्पताल के गायिनी वार्ड की छत का प्लास्टर भी गिर गया था। अस्पताल के इस पुराने भवन की दीवारों और छज्जे पर पौधे उग आए हैं, जो अब बड़े होते जा रहे हैं। इससे भवन को नुकसान पहुंच रहा है। इतना ही नहीं छज्जों का प्लास्टर भी गिरता रहता है। जहां से भी प्रतिदिन मरीजों की आवाजाही रहती है। इस समय बारिश के सीजन में ज्यादा खतरा बना हुआ है।

यह बोली मेडिकल सुप्रीडेंट

नागरिक अस्पताल की मेडिकल सुप्रीडेंट डा. आशा शर्मा ने बताया कि पुराना भवन होने के कारण जन औषधि केंद्र की छत का प्लास्टर गिर गया था। किसी को कोई चोट नहीं लगी है। अभी पुराने भवन की मरम्मत को लेकर एस्टीमेट बनाकर उच्च अधिकारियों को भेजा गया है। इसकी स्वीकृति मिलने के बाद मरम्मत करवाई जाएगी।

नारनौल। वह छत जिसका प्लास्टर गिरने से पंखा हुआ क्षतिग्रस्त व जन औषधी केंद्र के फर्श पर बिखरा पड़ा मलबा।

खबर संक्षेप

आज बंद रहेगी बेगपुर और गोकलपुर फीडर की लाइन

मंडी अटेली। दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम की छह जुलाई को सुबह आठ से सायं छह बजे तक बेगपुर फीडर व गोकलपुर फीडर की लाइन बंद रहेगी। जानकारी देते हुए जेई महेश कुमार ने बताया कि बेगपुर फीडर व गोकलपुर फीडर का केबल बदलने का कार्य किया जाएगा, जिसको लेकर लाइट दिनभर बंद रहेगी। वहीं पुराना बस स्टैंड से धनुंदा चौक तक सिटी लाइट भी बंद रहेगी।

बिजली बोर्ड में भंडारा आठ को

महेंद्रगढ़। शहर के कुराहवटा रोड स्थित दक्षिणी हरियाणा बिजली वितरण निगम कार्यालय में निगम के कर्मचारियों की ओर से आठ जुलाई को हनुमान जी के भंडारे का आयोजन किया जाएगा। वहीं सात जुलाई सोमवार को रात्रि जागरण एवं भजन संकीर्तन का आयोजन किया जाएगा तथा आठ जुलाई मंगलवार सुबह आठ बजे हवन के बाद भंडारे का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचकर प्रसाद ग्रहण करने का आहवान किया है।

पांच मिनट में ही बदमाशों ने घटना को दिया अंजाम

तीन बदमाशों ने पेट्रोल पंप पर फायरिंग कर 3.38 लाख लूटे, सीसीटीवी में कैद वारदात

- बिना नंबर की स्विफ्ट डिजायर कार में सवार होकर आए थे बदमाश
- पेट्रोल पंप में तैनात दो कर्मचारियों पर तानी पिस्तौल, आफिस की अलमारी में रखे 3.38 लाख रुपये लेकर फरार हुए बदमाश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

गांव दुलोठ अहीर स्थित एक पेट्रोल पंप से तीन बदमाश शुक्रवार को फायरिंग कर 3.38 रुपये लूट ले गए है। बदमाशों ने 5 मिनट में ही पूरी घटना को अंजाम दिया। लूट की घटना पेट्रोल पंप में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। पुलिस पेट्रोल पंप मालिक की शिकायत पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में पेट्रोल पंप संचालक अशोक कुमार ने बताया कि तीन बदमाश शुक्रवार की शाम हाथों में पिस्तौल लहराते हुए पंप परिसर में आए। आते ही बदमाशों ने दो फायर कर कर्मचारियों को डराकर उनकी जेब में रखे रुपये छीन लिए। इसके बाद दो बदमाश कार्यालय में घुस गए तथा कर्मचारियों के सिर पर पिस्तौल तानकर अलमारी की चाबी छीन ली। अलमारी में रखा करीब 3.38 लाख का कैश लूटकर राजस्थान की ओर भाग गए।

पेट्रोल पंप संचालक ने बताया कि बदमाश एक सफेद रंग की बिना नंबरों वाली स्विफ्ट डिजायर कार में सवार होकर आए थे। एक बदमाश पेट्रोल पंप के बाहर कार में ही बैठा रहा, जबकि तीन बदमाश अपने हाथों में पिस्टल लहराते हुए पेट्रोल पंप पर पहुंचे। आते ही बदमाशों दो फायर किए। घटना के बाद कर्मचारियों ने तुरंत वारदात की जानकारी पेट्रोल पंप संचालक अशोक कुमार को दी। जिसके बाद अशोक ने पेट्रोल पंप पर पहुंचकर डायल 112 पर पुलिस को सूचना दी। पेट्रोल पंप पर लूट की सूचना मिलने के बाद सदर थाना प्रभारी अपनी टीम सहित मौके पर पहुंचे।

पुलिस ने फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट की सहायता से मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले। हालांकि इस मामले में अभी तक पुलिस के हाथ खाली हैं।

महेंद्रगढ़। कर्मचारियों पर पिस्तौल तानते बदमाश व पुलिस स्टेशन में शिकायत देने पहुंचे पेट्रोल पंप संचालक एवं अन्य। फोटो : हरिभूमि

दुकान में लूट के उद्देश्य से चलाई छह राउंड गोलियां, पुलिस जांच में जुटी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल-सिंघाना नेशनल हाईवे नंबर 11 पर गांव गोद बलाहा के पास तीन अज्ञात युवकों ने एक दुकान के बाहर छह राउंड गोली चला दी। आरोप है कि उक्त युवक दुकान लूटने आए थे, लेकिन वह गोली चलाने के बाद युवक स्विफ्ट गाड़ी में सवार होकर वहां से फरार हो गए। सूचना मिलने के बाद मौके पर पुलिस पहुंची और जांच शुरू की। इस घटना के बाद गोद बलाहा बस स्टैंड के दुकानदारों ने अपनी मार्केट को बंद रखकर इसका विरोध जताया।

जानकारी मुताबिक नेशनल हाईवे पर गांव गोद बलाहां बस स्टैंड से थोड़ा आगे सेनेटरी की दुकान है। बलाहां कलां के दुकान मालिक ऋषभ ने बताया कि शुक्रवार देर शाम को तीन युवक स्विफ्ट गाड़ी में सवार होकर नारनौल की ओर से आए थे। आते ही उन्होंने दुकान का गल्ला चेक किया। गल्ला चेक करने पर उनको पैसे नहीं मिले। इस पर उन्होंने दुकान में तोड़फोड़ की, जिसके बाद उसको धमकाते हुए वहां पर हवा में छह राउंड गोलियां चलाई। गोली चलाने के बाद तीनों युवक उसी कार में बैठकर वहां से सिंघाना की ओर भाग गए। उसने तुरंत डायल 112 पर फोन करके इसकी जानकारी दी। जानकारी मिलने के बाद मौके पर डीएसपी सदर थाना सुरेश कुमार, सदर थाना प्रभारी धर्मवीर, सीआईए नारनौल, एफएसएल टीम व साइबर पुलिस सहित काफी संख्या में पुलिस बल वहां पहुंचा तथा जांच शुरू की।

दुकानदारों व ग्रामीणों में रोष

इस घटना के बाद शुक्रवार सुबह ग्रामीण दुकान के बाहर एकत्र हो गए। उन्होंने इस घटना के विरोध में रोष जताया और गांव गोद बलाहा बस स्टैंड का बाजार बंद कर दिया। उनका कहना है कि इस तरह की घटनाएं अब बढ़ गई हैं। ग्रामीणों ने पुलिस प्रशासन से आरोपितों को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग की। मौके पर गहली पुलिस चौकी से मौके पर पहुंची तथा लोगों को आश्वासन दिया कि आरोपितों की जल्द गिरफ्तारी कर ली जाएगी।

अवैध हथियार के साथ एक काबू, देसी पिस्टल और दो जिन्दा कारतूस बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सीआईए पुलिस टीम ने थाना नांगल चौधरी क्षेत्र से अवैध हथियार रखने के मामले में गुप्त सूचना के आधार पर एक आरोपित संजय वासी कालबा नांगल चौधरी को अवैध हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपित से पुलिस ने एक अवैध देसी पिस्टल व दो जिन्दा कारतूस बरामद किए। आरोपित के खिलाफ थाना नांगल चौधरी में आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। आरोपित के खिलाफ पहले भी लड़ाई-झगड़े, हत्या का प्रयास, लूट और आर्म्स एक्ट के तहत नौ मामले दर्ज हैं। आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

सीआईए टीम गस्त के दौरान नजदीक टोल सिरोही बहाली पर मौजूद थे, टीम को गुप्त सूचना मिली कि संजय वासी गांव कालबा अपने पास एक अवैध देशी पिस्टल लिए हुए नया बस अड्डा के पास बहरोड पुल नांगल चौधरी के पास खड़ा है और किसी वारदात को अंजाम देने की फिराक में है। अगर तुरंत रेड की जाए तो अवैध असला सहित काबू किया जा सकता है। सूचना के आधार पर बतलाए हुए स्थान पर रेड की, जहां पर एक नौजवान लड़का हाईवे बहरोड पुलिया के नीचे खड़ा दिखाई दिया, जो टीम को देखकर तेज कदमों से चलने लगा। जिसको काबू करके नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम संजय उपरोक्त बताया। जिसकी तलाशी लेने पर एक देसी पिस्टल और 2 जिन्दा कारतूस मिले। पुलिस ने अवैध हथियार को जब्त कर लिया और आरोपित के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित। फोटो : हरिभूमि

नशे में धुत टैंपों चालक ने टक्कर मारकर क्षतिग्रस्त की बाइक और स्कूटी

नारनौल। नशे में धुत एक टैंपो ड्राइवर ने सड़क किनारे खड़े कई वाहनों को टक्कर मार दी, जिससे लगभग 20 बाइक व स्कूटी क्षतिग्रस्त हो गई। लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने टैंपो ड्राइवर को काबू कर लिया। सिंघाना रोड पर राजा गार्डन के समीप बीते शुक्रवार रात को एक टैंपो ड्राइवर ने दुकानों के बाहर खड़ी हुई बाइक व स्कूटी को टक्कर मार दी। इससे आसपास के दुकानदारों सुरेश सैनी, रमेश कुमार व बिल्लू प्रधान ने बताया कि वहां पर राजा गार्डन के नाम से एक मैरिज पैलेस बना हुआ है, जिसके पास व्हीकल मिस्त्रियों की दुकानें हैं। अक्सर इन दुकानों तथा मैरिज पैलेस के बाहर अनेक स्कूटी व बाइक खड़ी रहती हैं। शुक्रवार रात को करीब साढ़े आठ बजे सिंघाना की ओर से एक टैंपो बड़ी तेज गति से आया। तब चालक ने अपने टैंपो से नियंत्रण खो दिया और देखते ही देखते उसने वहां खड़ी मोटरसाइकिल व स्कूटी को टक्कर मार दी। इससे ये क्षतिग्रस्त हो गई। इस घटना के बाद वहां पर काफी लोग इक्टठा हो गए, जिन्होंने टैंपो चालक को पकड़ लिया और डायल 112 पर फोन करके पुलिस को बुला लिया। लोगों ने टैंपो ड्राइवर को पुलिस कर्मियों के हवाले कर दिया। फिर पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी।

सरकारी भूमि होगी अवैध कब्जों से मुक्त, राजस्व विभाग द्वारा अतिचारी पर कोर्ट के निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

प्रदेश के सरकारी विद्यालयों की जमीन पर अवैध कब्जे एवं अनाधिकृत उपयोग से मुक्त करवाने के लिए सरकार ने ठोस कदम उठाने की मंशा बनाई है। इस संदर्भ में शिक्षा विभाग के सहायक निदेशक (निर्माण) ने राज्य के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों, मौलिक शिक्षा अधिकारियों, सभी डीपीसी और हरियाणा बोर्ड के सचिव को पत्र भेजकर राजकीय विद्यालयों की भूमि को कब्जा मुक्त कराने के निर्देश दिए है। इसके लिए सभी कानूनी विकल्प अपनाने के भी आदेश जारी किए जा चुके हैं।

राजस्व एवम आपदा प्रबंधन विभाग ने न केवल शिक्षा विभाग अपितु राज्य के सभी विभागाध्यक्षों को पत्र भेजकर सरकारी भूमि कब्जा मुक्त करने और उसका रिकार्ड दर्ज करने के निर्देश दिए हैं। पत्र में सहायक निदेशक (निर्माण) ने राज्य के समस्त विद्यालयों अथवा कार्यालयों में उपयोग की गई भूमि, सरप्लस भूमि, गैरकानूनी कब्जे और कब्जा हटाने के लिए कोर्ट केस की जानकारी वेब पोर्टल पर अपलोड करने के निर्देश दिए है। इस बारे में शिक्षा विभाग ने चार जुलाई को जारी किए अपने आदेश क्रमांक 9/82-2024 (निर्माण) में लिखा है कि हरियाणा सरकार के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा जारी यूजर आईडी एवं पासवर्ड का प्रयोग करते हुए सभी विद्यालय और कार्यालय उपयोग की गई भूमि एवं अवैध कब्ज की जानकारी तुरंत प्रभाव से वेब पोर्टल पर अपलोड करें। साथ ही साथ यह भी निर्देश दिए गए हैं कि अगर स्कूल की भूमि पर गैरकानूनी कब्जा है तो उसे हटाने के लिए की गई कानूनी कार्रवाई की जानकारी भी राजस्व विभाग को तुरंत उपलब्ध करवाई जाए।

अवैध कब्जा हटाने की कार्रवाई अथवा कोर्ट केस अभी तक नहीं किया गया है तो पीपी एक्ट 1972 या अन्य न्यायोचित धाराओं के तहत केस दायर कर कब्जा हटाने की कार्रवाई को अमल में लाया जाए और इसकी सूचना राजस्व विभाग एवम शिक्षा विभाग के मुख्यालय को तुरंत भेजी जाए।

सरकार चुस्त-विभाग सुस्त

राजस्व एवम आपदा प्रबंधन विभाग का मानना है कि सरकारी भूमि पूर्णता अवैध कब्जों से मुक्त होनी चाहिए। इसके लिए विभाग लंबे समय से प्रयासरत है एवं हरियाणा सरकार के सभी कार्यालय विभागों को इस संदर्भ में बार-बार लिखा जा रहा है। इससे पूर्व भी राजस्व एवम आपदा प्रबंधन विभाग ने 13 अक्तूबर 2023, 31 मार्च 2025, 21 अप्रैल 2025, 24 जून 2025 को राज्य के विभिन्न विभागों को पत्र भेजकर सरकारी कार्यालयों में उपयोग की जा रही भूमि, सरप्लस भूमि, अवैध एवम गैर कानूनी कब्जे वाली भूमि तथा कब्जा हटाने के लिए की गई कार्यवाही को वेब पोर्टल पर दर्ज करने के निर्देश दिए जा चुके हैं किन्तु सरकारी विभाग गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। अब चार जुलाई को पुनः राजस्व विभाग ने इसके लिए पत्र जारी करते हुए इस पर उचित कार्रवाई की अपील की है।

हरियाणा की नारी शक्ति का उदाहरण बना प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हरियाणा का नाम रोशन कर रही बवानिया की खिचड़ी

- विश्व मंच तक पहुंची बनारसी देवी के नेतृत्व की असाधारण गाथा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

हरियाणा के कनीना खंड के गांव बवानिया से निकली प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह की कहानी आज पूरे प्रदेश और देश की महिलाओं के लिए एक अमर प्रेरणा बन चुकी है। यह कहानी है बनारसी देवी और उनके समूह की उन मेहनती महिलाओं की जिन्होंने अपने सामूहिक प्रयास, अटूट विश्वास और हरियाणा सरकार की दूरदर्शी नीतियों के सहयोग से आत्मनिर्भरता की एक नई इबारत लिखी है। आज यह समूह न केवल 300 से अधिक महिलाओं को सम्मानजनक रोजगार दे रहा है बल्कि उनके द्वारा निर्मित उत्पादों की ख्याति देश की सीमाओं को लांघकर अमेरिका और जापान जैसे दूर देशों तक पहुंच चुकी है।

इस स्वयं सहायता समूह की यात्रा वर्ष 2001 में शुरू हुई जब बनारसी देवी ने अपने गांव की महिलाओं को संगठित कर आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा। इसी सपने को साकार करने के लिए उन्होंने प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह की नींव रखी। 2005 से इस समूह की विकास यात्रा ने गति पकड़ी। वर्ष 2017 में समूह को औपचारिक रूप देते हुए उन्होंने पहला कदम उठाया। उन्होंने गांव की महिलाओं को अचार बनाने का कौशल सिखाया। इस शुरुआती सफलता से उत्साहित होकर समूह की महिलाओं को करनाल स्थित बागवानी प्रशिक्षण संस्थान में उन्नत प्रशिक्षण के लिए भेजा जहां उन्होंने उत्पादों की गुणवत्ता और पैकेजिंग के गुर सीखे।

कनीना। बाजरे, ज्वार, रागी से स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद तैयार करती स्वयं सहायता समूह की महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

अब किसान उत्पादक संगठन बनाने की योजना

हरियाणा के कृषि विज्ञान केंद्र से मिले मार्गदर्शन ने प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह के छोटे से प्रयास को एक बड़े आंदोलन का रूप दे दिया है। भविष्य की ओर देखते हुए समूह एक किसान उत्पादक संगठन बनाने की योजना पर भी कार्य कर रहा है। यह पहल न केवल बवानिया बल्कि पूरे महेंद्रगढ़ जिले की ग्रामीण महिलाओं को लाभान्वित करेगी और उन्हें स्थायी रोजगार के अवसर प्रदान करेगी। यह कदम हरियाणा सरकार की कृषि और ग्रामीण विकास नीतियों के अनुरूप है जो किसानों और विशेषकर महिला किसानों को संगठित कर उन्हें बाजार से सीधे जोड़ने पर केंद्रित है। इस समूह में प्रधान भागवंती, सचिव कृष्णा देवी, कोषाध्यक्ष रेखा देवी, चलती, माया, सविता, मंजु, राजबाला, सुमन, सुषमा, रेनू यादव, गायत्री, सविता, रेनू देवी, संतोष, ललिता देवी जैसी कई सशक्त महिलाएं महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

सहयोग समूह के लिए एक गेम चेंजर साबित

हरियाणा सरकार के राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन का सहयोग समूह के लिए एक गेम-चेंजर साबित हुआ। इसी योजना के तहत 2021 में समूह को दाल प्रसंस्करण के लिए एक मिनी दाल मिल उपलब्ध करवाई गई जिसने उनके उत्पादन क्षमता में क्रांति ला दी। धीरे-धीरे समूह ने अपनी गतिविधियों का विस्तार किया और महिला किसान संगठन से जुड़कर मोटे अनाज (मिलेट्स) और ऑर्गेनिक उत्पादों के उत्पादन पर विशेष ध्यान दिया। बनारसी देवी के कुशल नेतृत्व में समूह की महिलाओं ने बाजरे, ज्वार, रागी से बने स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद जैसे बाजरा खिचड़ी, बेसन, हल्दी व मसाले, तेल और गुड़ तैयार करना सीखा। आज इस समूह की कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता का ही नतीजा है कि उनके उत्पादों की मांग न केवल हरियाणा बल्कि दिल्ली, चंडीगढ़, गुजरात, गोवा, जापान, अमेरिका और सिंगापुर जैसे देशों तक पहुंच चुकी है। समूह द्वारा तैयार की गई बाजरा खिचड़ी अपनी पौष्टिकता और स्वाद के कारण इतनी लोकप्रिय हुई है कि यह अब अमेरिका तक पहुंच चुकी है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हरियाणा का नाम रोशन कर रही है। प्रगतिशील टैगोर स्वयं सहायता समूह ने केवल अपने सदस्यों को ही सशक्त नहीं किया बल्कि बनारसी देवी के नेतृत्व में उन्होंने अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का मार्ग प्रशस्त किया है। समूह ने हरियाणा और राजस्थान में समय-समय पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 100 से अधिक महिलाओं को स्वरोजगार स्थापित करने का मार्गदर्शन दिया है। इन शिविरों में महिलाओं को मोटे अनाज से विभिन्न खाद्य उत्पाद तैयार करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है जिससे वे भी आत्मनिर्भर बन सकें। बनारसी देवी का योगदान केवल आर्थिक सशक्तिकरण तक ही सीमित नहीं है। उनकी समाज सेवा, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उनके अभूतपूर्व योगदान को हरियाणा सरकार ने भी खुले दिल से सराहा है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने उन्हें सम्मानित किया।

निवेश मंत्रा | बिजनेस डेस्क

- पहले अपना लक्ष्य तय करें और रिस्क क्षमता जांच लें
- आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर
- रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश सही

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

निवेश करने जा रहे हैं तो पल्ले 'गांठ' बांध लें ये बातें, अच्छी होगी कमाई

म्यूचुअल फंड निवेश का एक पॉपुलर और स्मार्ट तरीका बन चुका है। यह एक ऐसा ऑप्शन है, जिसमें छोटे निवेशकों को भी प्रोफेशनल मैनेजमेंट, डायवर्सिफिकेशन और फ्लेक्सिबिलिटी का फायदा मिल पाता है, लेकिन अपने लिए सही म्यूचुअल फंड का सेलेक्शन करते समय केवल पिछले रिटर्न को देखना ही काफी नहीं होता। सही फंड चुनने के लिए कुछ अहम बातों का ध्यान रखना जरूरी है ताकि निवेश से बेहतर रिटर्न मिले और रिस्क भी कंट्रोल में रहे। सबसे पहले अपनी रिस्क क्षमता को देखते हुए लक्ष्य तय करें। इसके बाद ही निवेश के इस समर में उतरे। अगर इन जरूरी बातों पर ध्यान नहीं दिया तो सही फंड चुनने में चूक हो सकती है और आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है।

अपना फाइनेंशियल गोल तय करें

सबसे पहले ये समझना जरूरी है कि आप निवेश क्यों कर रहे हैं। घर खरीदने के लिए, बच्चों की पढ़ाई के लिए, रिटायरमेंट प्लान करने के लिए या फिर एसेट्स बनाने के लिए। अगर आपका निवेश का लक्ष्य साफ होगा, तो आपके लिए यह तय करना भी आसान हो जाएगा कि आपके लिए किस तरह का फंड बेहतर रहेगा। मिसाल के तौर पर अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि का है, तो इक्विटी म्यूचुअल फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं, जबकि रिटायरमेंट में ज्यादा वक्त नहीं बचा है तो डेट फंड्स में निवेश करना सही हो सकता है.

रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन

हर म्यूचुअल फंड का रिस्क लेवल अलग होता है। इक्विटी फंड ज्यादा उतार-चढ़ाव वाले होते हैं, जबकि डेट या हाइब्रिड फंड ज्यादा स्टेबल रिटर्न देते हैं। आपकी रिस्क लेने की क्षमता आपकी उम्र, आमदनी और वित्तीय जिम्मेदारियों के हिसाब से भी तय होती है। साथ ही यह भी सोचें कि आपको पैसों की जरूरत कितने समय बाद पड़ेगी। अगर आपका लक्ष्य कुछ साल दूर है, तो इक्विटी में निवेश कर सकते हैं, लेकिन शॉर्ट टर्म के लिए डेट या लिक्विड फंड ज्यादा अच्छे माने जाते हैं।

म्यूचुअल फंड की कैटेगरी को समझें

म्यूचुअल फंड्स की कई कैटेगरी हैं। मिसाल के तौर पर इक्विटी, डेट, हाइब्रिड, इंडेक्स, सेक्टोरल, ईएलएसएस वगैरह। हर फंड कैटेगरी की खूबियां अलग-अलग होती हैं। इसलिए यह जानना जरूरी है कि कौन-सा फंड किस तरह की जरूरत के लिए बना है। फंड एक्टिव है या पैसिव, यह जानना भी जरूरी है, क्योंकि इससे निवेश की रणनीति बदल सकती है।

पिछला ट्रैक रिकॉर्ड जरूर चेक करें

म्यूचुअल फंड्स के पिछले रिटर्न भविष्य की गारंटी नहीं देते, लेकिन यह जरूर बताते हैं कि किसी फंड ने बाजार के अलग-अलग साइकल या हालात में कैसा प्रदर्शन किया है। किसी फंड के तीन, पांच और सात साल के औसत रिटर्न की तुलना स्कीम के बेंचमार्क इंडेक्स और कैटेगरी एवरेज से करने पर उसके प्रदर्शन का काफी-कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है।

फंड का पोर्टफोलियो देखें

कोई फंड किन कंपनियों में निवेश कर रहा है, यह जानना भी जरूरी है। इससे पता चलता है कि फंड मैनेजर की इनवेस्टमेंट फिलॉसफी क्या है और यह आपके जोखिम प्रोफाइल से मेल खाती है या नहीं। मिसाल के तौर पर लार्ज कैप स्टॉक्स में ज्यादा निवेश करने वाले फंड, मिड कैप या स्मॉल कैप में ज्यादा इनवेस्ट करने वाली स्कीम के मुकाबले कम रिस्क वाले हो सकते हैं।

फंड मैनेजर का पिछला ट्रैक रिकॉर्ड

म्यूचुअल फंड्स में फंड मैनेजर की भूमिका बहुत अहम होती है। उनका अनुभव और ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि वे बाजार की चाल को कितना समझते हैं और निवेशकों के पैसों को संभालने में कितने माहिर हैं। यह भी देखें कि जिस फंड में आप निवेश करना चाहते हैं, उसके फंड मैनेजर कितने अनुभवी हैं।

निवेश के खर्च पर भी गौर करें

किसी फंड में निवेश करने पर कितना खर्च आता है, यह उसके एक्सपेंस रेशियो से पता चलता है. अगर यह ज्यादा है तो आपकी कमाई पर असर पड़ सकता है। एक्टिव फंड्स में यह रेशियो कुछ अधिक हो सकता है, लेकिन पैसिव या इंडेक्स फंड्स में इसे कम ही रहना चाहिए. साथ ही डायरेक्ट प्लान का एक्सपेंस रेशियो भी उसी स्कीम के रेगुलर प्लान से कम होता है।

एग्जिट लोड व लॉक-इन पीरियड को समझें

कुछ फंड्स में तय समय से पहले पैसे निकालने पर एग्जिट लोड लगता है। ईएलएसएस जैसे फंड में 3 साल का लॉक-इन पीरियड होता है। कुछ फंड्स में यह 5 साल भी हो सकता है। इसलिए निवेश से पहले यह जानना जरूरी है कि आप जरूर पड़ने पर अपने पैसे कितनी जल्दी निकाल सकते हैं और उसका खर्च कितना होगा।

टैक्स के असर को भी जानें

इक्विटी और डेट फंड्स पर टैक्स की दरें अलग-अलग होती हैं। लॉन्ग टर्म और शॉर्ट टर्म के टैक्स रेट भी अलग होते हैं। निवेश का फैसला करते समय टैक्स इम्पैक्ट को ध्यान में रखें ताकि नेट रिटर्न का सही कैलकुलेशन हो सके।

फंड हाउस का पुराना प्रदर्शन भी देखें

जिस एसेट मैनेजमेंट कंपनी से फंड जुड़ा है, उसकी क्रेडिबिलिटी और पिछले इतिहास को जानना भी जरूरी है। एक मजबूत और भरोसेमंद एएमसी आपके पैसों को बेहतर तरीके से मैनेज कर सकता है। म्यूचुअल फंड में निवेश से अच्छा रिटर्न मिल सकता है, लेकिन इसके लिए आंख बंद करके किसी भी फंड में पैसा न लगाएं। अपनी जरूरत, रिस्क लेने की क्षमता और इनवेस्टमेंट होराइजन को समझें और ऊपर बताए गए हर प्वाइंट को ध्यान में रखकर फैसला करें। अगर जरूरत हो तो किसी फाइनेंशियल एक्सपर्ट की सलाह भी लें।

पीपीएफ में निवेश से भी जुटा सकते हैं 1.50 करोड़, ट्रिपल 5 का फॉर्मूला आएगा काम

केंद्र सरकार ने निवेशकों खासतौर से सैलरीड क्लास के बीच पॉपुलर स्मॉल सेविंग्स पर ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। जुलाई से सितंबर 2025 तक के लिए पीपीएफ पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलता रहेगा। पीपीएफ की मैच्योरिटी 15 साल होती है, यानी यह लंबी अवधि के निवेश पर फोकस करने वाली स्कीम है। फाइनेंशियल एडवाइजर भी इसे लंबी अवधि के लिए सुरक्षित स्कीम मानते हैं। इस स्कीम के जरिए आप कितना फंड जुटा सकते हैं। क्या 1 करोड़ या 1.50 करोड़। इसका जवाब है आपके द्वारा होल्ड किए जाने वाली अवधि। पब्लिक प्रोविडेंट फंड एक ऐसी सरकारी स्कीम है, जिसे लंबी अवधि की निवेश के लिए डिजाइन किया गया है। अगर इस सरकारी स्कीम में लंबी अवधि तक या पूरे नौकरी पीरियड तक निवेश बनाए रहें तो रिटायरमेंट पर यह सरप्राइज दे सकता है। अब सवाल है कि मैच्योरिटी 15 साल की है तो इसे 25 साल या 30 साल तक होल्ड करना कैसे संभव है। ऐसा संभव है, इसे संभव बनाता है इस स्कीम में एक्सटेंशन से जुड़ा नियम।

पीपीएफ में निवेश के नियम

पीपीएफ की मैच्योरिटी वैसे तो 15 साल की है, लेकिन निवेशक चाहें तो इसे एक बार में 5 साल - 5 साल के लिए कितनी बार भी आगे बढ़ा सकते हैं। इस तरह से यह स्कीम पूरी नौकरी पीरियड में भी बनाए रखी जा सकती है। अगर आप एक्सटेंशन से जुड़े इस नियम का सही से फायदा उठाते हैं तो आपका भविष्य वित्तीय रूप से बहुत हद तक सुरक्षित हो सकता है। हमने यहां 28 साल से 58 साल तक यानी नौकरी के 30 साल निवेश पर कैलकुलेशन दिया है।

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

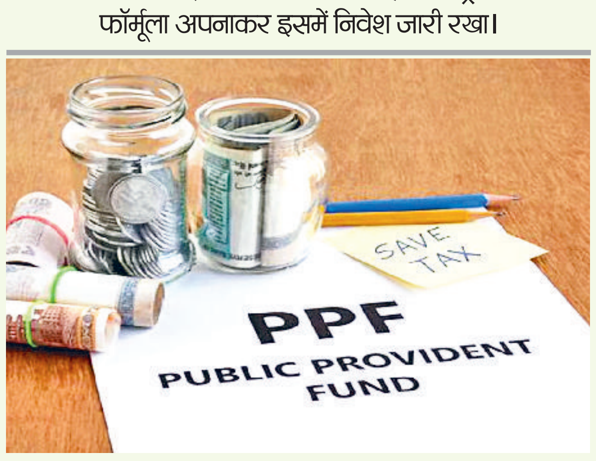

28 से 58 साल तक निवेश

28 की उम्र में पीपीएफ अकाउंट शुरू करना और इसे 58 साल तक बनाए रखने का मतलब है कि आपने 15 साल की मैच्योरिटी के बाद 3 बार 5 साल के लिए यानी ट्रिपल 5 का फॉर्मूला अपनाकर इसमें निवेश जारी रखा।

इसे ऐसे समझें

- एक फाइनेंशियल ईयर में जमा : 1.50 लाख रुपये
- ब्याज दर : 7.1 फीसदी सालाना
- 15 साल में कुल जमा : 22,50,000
- 15 साल बाद कुल फंड : 40,68,209
- 3 बार एक्सटेंड करने पर
- 30 साल में कुल जमा : 45,00,000
- 30 साल बाद कुल फंड : 1,54,50,911
- ब्याज का फायदा : 1,09,50,911 रुपये

पीपीएफ को एक्सटेंड करने पर क्या हैं फायदे?

यह बचत स्कीम एक्सटेंड करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आप अपने रिटायरमेंट तक इसके जरिए एक बड़ा कॉर्पस जो 1.50 करोड़ रुपये भी हो सकता है, तैयार कर सकते हैं। वहीं ईपीएफ अकाउंट से भी आपको रिटायरमेंट पर अच्छा खासा फंड मिलेगा। ऐसे में आपका बुढ़ापा पूरी तरह से टेंशन फ्री हो जाएगा।

क्लोजिंग बैलेंस पर 89,000 रुपये मंथली इनकम

यहां आपने 30 साल तक निवेश कर, रिटायरमेंट तक 1.50 करोड़ फंड जुटा लिया। अब इसी फंड से मंथली कमाई करना चाहते हैं तो इसे फिर एक्सटेंड कर फायदा उठा सकते हैं. अगर आप स्कीम को बिना कुछ निवेश किए 5 साल के लिए एक्सटेंड किया है तो आपको क्लोजिंग बैलेंस पर सालाना ब्याज मिलेगा। वहीं हर साल एक बार आप पूरी रकम का कितना फीसदी भी निकाल सकते हैं। यह 100 फीसदी तक हो सकता है। यहां 1.50 करोड़ रुपये के क्लोजिंग बैलेंस पर 7.1 फीसदी सालाना ब्याज मिलेगा। यह एक साल में 10,65,000 रुपये होगा. आप एक साल में एक बार में इस पूरी ब्याज की रकम को निकाल सकते हैं। इसे 12 महीनों में बांट दें तो करीब 88,750 रुपये महीना होगा. वहीं इस निकासी पर कोई टैक्स भी नहीं लगेगा।

क्या है पीपीएफ

- पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड) एक प्रकार की बचत योजना है जो भारत सरकार द्वारा संचालित की जाती है। यह योजना व्यक्तियों को अपने भविष्य के लिए बचत करने और कर लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है।
- लंबी अवधि की बचत: पीपीएफ एक लंबी अवधि की बचत योजना है जिसमें निवेश की अवधि 15 वर्ष होती है।
- कर लाभ: पीपीएफ में निवेश करने से आयकर अधिनियम की धारा 80सी के तहत कर लाभ प्राप्त होता है।
- निश्चित ब्याज दर: पीपीएफ पर ब्याज दर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है और यह दरें समय-समय पर बदलती रहती हैं।
- सुरक्षित निवेश: पीपीएफ एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकार का समर्थन होता है।

सोने में लौट रहा निवेशकों का भरोसा

गोल्ड ईटीएफ ने 5 वर्ष में दिया बड़ा मुनाफा

विकल्प | बिजनेस डेस्क

अगर आपने पिछले 5 सालों में हर महीने सिर्फ 10,000 रुपये गोल्ड ईटीएफ में लगाए होते, तो आज आपकी रकम करीब 10 लाख हो चुकी होती! एक रिपोर्ट के मुताबिक, येलो कमोडिटी यानी गोल्ड पर बेस्ड ईटीएफ ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। उदाहरण के तौर पर, एलआईसी एमएफ गोल्ड ईटीएफ में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी से कुल 6 लाख रुपये का निवेश करके 5 साल में 9.93 लाख रुपये तक का फंड तैयार किया है। इस दौरान इसका एक्सआईआरआर 20.93% रहा। इगोवहीं, यूटीआई गोल्ड ईटीएफ ने भी 9.92 लाख का रिटर्न दिया, जिसमें एक्सआईआरआर 20.87% रहा। कुल मिलाकर, गोल्ड ईटीएफ ने यह दिखा दिया है कि अगर आप अनुशासित तरीके से एसआईपी करते हैं, तो आपको बेहतर रिटर्न मिल सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में कुल 291 करोड़ रुपये का निवेश आया है। इससे पता चलता है कि गोल्ड में निवेशकों को भरोसा लौट रहा है।

सोना निवेश का भरासेमंद विकल्प

मई 2025 में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ की नया निवेश हुआ। एक्सपर्ट का मानना है कि सोने की मजबूत कीमत और दुनिया भर की अनिश्चितताओं के कारण निवेशकों का सोने में फिर से भरोसा बढ़ रहा है। इससे पता चलता है कि सोना अब भी एक सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का ऑप्शन बना हुआ है। जानकारों के मुताबिक निवेशक फिर से सोने पर भरोसा कर रहे हैं क्योंकि सोना शेयर और बॉन्ड बाजार की अस्थिरता के बीच एक सुरक्षित जगह माना जाता है। मई महीने में सोने की कीमतें ज्यादा बदल नहीं हुईं, जिससे निवेशकों के लिए यह सही समय था कि वे अपने पैसे सुरक्षित जगह लगाएं या अपने निवेश का संतुलन ठीक करें। इसलिए अब ज्यादा लोग सोने में निवेश कर रहे हैं।

क्या है गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ (एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड) एक प्रकार का निवेश विकल्प है जो सोने की कीमतों को ट्रैक करता है। यह निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।

गोल्ड ईटीएफ के लाभ

- **सोने में निवेश :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को सोने में निवेश करने का अवसर प्रदान करता है बिना भौतिक सोना खरीदने की आवश्यकता के।
- **विविधीकरण :** गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद कर सकता है।
- **लिक्विडिटी :** गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- **कम लागत :** गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है।

एसआईपी करने वालों के लिए खुशखबरी

- 5 साल में गोल्ड ईटीएफ ने 10,000 मासिक एसआईपी को 10 लाख में बदला
- एलआईसी, यूटीएल, और इनवेस्को जैसे फंड्स ने 20% से ज्यादा रिटर्न दिया
- मई में गोल्ड ईटीएफ में 291 करोड़ का निवेश आया, दे रहा बढ़िया संकेत

गोल्ड ईटीएफ- 5 साल का परफॉर्मेंस

गोल्ड ईटीएफ	10,000 मंथली एसआईपी का वर्तमान वैल्यू जो 5 साल पहले शुरू किया था	एक्सआईआरआर (%)
एलआईसी	993,917.25	20.93
यूटीआई गोल्ड	992,677.42	20.87
इन्वेस्को इंडिया	991,639.77	20.83
एक्सिस	990,730.89	20.79
आईसीआईसीआई प्रू	990,214.31	20.77
आदित्य बिड़ला एसएल	988,839.31	20.71
एचडीएफसी	988,609.05	20.7
कोटक	988,529.52	20.7
एसबीआई	986,021.61	20.59
क्वांटम गोल्ड फंड	984,917.72	20.54
निप्पॉन इंडिया ईटीएफ गोल्ड बीईएस	983,924.09	20.5

गोल्ड ईटीएफ की विशेषताएं

- सोने की कीमतों को ट्रैक करना : गोल्ड ईटीएफ सोने की कीमतों को ट्रैक करता है, जिससे निवेशकों को सोने के मूल्य में परिवर्तन के अनुसार लाभ या हानि होती है।
- एक्सचेंज पर कारोबार : गोल्ड ईटीएफ शेयर बाजार में सूचीबद्ध होता है और इसका कारोबार शेयरों की तरह किया जा सकता है।
- लिक्विडिटी : गोल्ड ईटीएफ में उच्च लिक्विडिटी होती है, जिससे निवेशक अपने निवेश को आसानी से बेच सकते हैं।
- कम लागत : गोल्ड ईटीएफ में निवेश करने की लागत कम होती है क्योंकि इसमें भौतिक सोना खरीदने और रखने की आवश्यकता नहीं होती है।

स्वास्थ्य बीमा में ईएमआई के लाभ : कवरेज को और किफायती बनाएं

ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक ■ पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाने में होते हैं सक्षम ■ मिलती है मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा

जानकारी
भास्कर नेरुरकर

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, स्वास्थ्य समस्याएं और बढ़ते मेडिकल खर्चे व्यक्तियों और परिवारों दोनों के लिए एक आम समस्या बन गए हैं। हेल्थकेयर की बढ़ती लागत के चलते, बहुत से लोगों के लिए कॉम्प्रिहेंसिव स्वास्थ्य बीमा कवरेज खरीदना पहले से ज़्यादा मुश्किल हो गया है। सुलभता और किफायत को बढ़ाने के लिए, इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट ऑथोरिटी ऑफ इंडिया (आईआरडीएआई) ने 2019 में यह नियम बनाया कि बीमा प्रीमियम का भुगतान एकमुश्त करने के बजाय, बीमा कंपनियां पॉलिसीधारकों को ईएमआई (समान मासिक किश्तों) में प्रीमियम चुकाने का विकल्प दें। इससे लोगों के लिए अपने खर्चों को बजट में लाना आसान हो जाएगा और यह सुनिश्चित होगा है कि उनके पास अप्रत्याशित मेडिकल खर्चों से सुरक्षा के लिए निरंतर स्वास्थ्य कवरेज हो। ईएमआई भुगतान विकल्प के साथ स्वास्थ्य बीमा खरीदना करना ज़्यादा सुविधाजनक हो जाता है, जिससे पॉलिसीधारक छोटी, ज़्यादा सुलभ किश्तों में प्रीमियम का भुगतान कर पाते हैं।

ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा आपको एक बार में पूरी राशि का भुगतान करने के बजाय, मासिक, त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक भुगतान माध्यम चुनने की सुविधा देता है, जिससे अपना बजट बनाना आपके लिए आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, अगर आपका वार्षिक प्रीमियम 36,000 रुपये है, तो फाइनेंशियल बाधाओं की वजह से पूरी राशि का एकमुश्त भुगतान करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ईएमआई भुगतान के ज़रिए, आप 3,000 रुपये की 12 किश्तों में भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं या पूरी राशि को त्रैमासिक या अर्ध-वार्षिक किश्तों में बांटकर भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपको लगातार कवरेज भी मिलती है और आपकी फाइनेंशियल स्थिरता भी बनी रहती है। यह तरीका पॉलिसीधारकों को एक बार में बड़े खर्चों से बचने में मदद करता है, जिससे स्वास्थ्य बीमा प्राप्त करना और मैनेज करना आसान हो जाता है। ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा लेने से कई लाभ मिलते हैं, जो हेल्थकेयर कवरेज प्राप्त करना आसान और सुविधाजनक बनाते हैं. यहां कुछ प्रमुख लाभ दिए गए हैं।

उच्च कवरेज का एक्सेस

एक अच्छा स्वास्थ्य बीमा प्लान होना बहुत ज़रूरी है, लेकिन कई बार इसकी लागत आपके लिए चिंता का विषय हो सकती है। ईएमआई का विकल्प चुनकर, आप उच्च कवरेज वाले प्लान खरीद सकते हैं। जो कि विशेष रूप से हृदय रोग, कैंसर, किडनी फेलियर या न्यूरोलॉजिकल विकार जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मददगार होते हैं। इन बीमारियों का इलाज महंगा हो सकता है, जिसमें लंबे समय तक मेडिकल केयर, सर्जरी और महंगी दवाओं की आवश्यकता होती है। ईएमआई प्लान के साथ, आप उन गंभीर बीमारियों को कवर करने वाली बीमा पॉलिसी चुन सकते हैं, जिनके लिए एकमुश्त भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे कठिन समय में आपके और आपके परिवार के लिए फाइनेंशियल सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

सीनियर सिटीज़न और रिटायर हो चुके लोगों के लिए उपयुक्त

जैसे-जैसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है, स्वास्थ्य बीमा और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, लेकिन आयु से संबंधित स्वास्थ्य जोखिमों के कारण कवरेज की लागत अधिक हो सकती है. सीनियर सिटीज़न और रिटायर हुए लोगों के लिए, बीमा के लिए बड़ी राशि का एकमुश्त भुगतान चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासतौर पर तब जब उनकी आय एक निश्चित राशि तक ही सीमित हो। ऐसी स्थिति में ईएमआई प्लान सहायक बन जाते हैं। सुविधाजनक भुगतान विकल्पों के साथ, वे सही पॉलिसी प्राप्त कर सकते हैं जो फाइनेंशियल स्थिरता बनाए रखते हुए उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा करती है।

ज़्यादा किफायती

बीमा के लिए एक बड़ी राशि का भुगतान करना कभी-कभी आपकी जेब पर भारी पड़ सकता है। ऐसे में ईएमआई प्लान मददगार साबित होते हैं -वे खर्च को छोटे, आसान भुगतानों में बांटते हैं, जिससे हर किसी के लिए बीमा लेना ज़्यादा किफायती हो जाता है। वार्षिक प्रीमियम का एक बार में भुगतान करके परेशान होने की बजाय, आप आसान किश्तों में भुगतान कर सकते हैं, जिससे आपका आर्थिक दबाव कम हो सकता है। उदाहरण के लिए, कॉम्प्रिहेंसिव पॉलिसी के लिए एक बार में 50,000 रुपये का भुगतान करने के बजाय, आप एक वर्ष के लिए प्रति माह लगभग 4,167 रुपये का भुगतान करने का विकल्प चुन सकते हैं।

परेशानियों को कम करते हैं ऑटोमैटिक भुगतान

कभी-कभी बीमा प्रीमियम का भुगतान करना मुश्किल हो सकता है, खासतौर पर जब आप जीवन में व्यस्त हो जाते हैं। इसलिए कई बीमा कंपनियां ईएमआई भुगतान के लिए ऑटो-डेबिट विकल्प प्रदान करती हैं, जिससे प्रीमियम का भुगतान करना आसान हो जाता है और यह सुनिश्चित होता है कि आपकी पॉलिसी जारी रहे. ऑटो-डेबिट सुविधा के साथ, आपकी चुनी गई आवृति, जैसे मासिक, तिमाही, अर्ध-वार्षिक या वार्षिक के आधार पर, आपका बीमा प्रीमियम ऑटोमैटिक रूप से आपके बैंक अकाउंट से काटा जाता है। यह सुविधा आपको भुगतान से चूकने से बचाती है और भुगतान में देरी की वजह से पॉलिसी समाप्त होने के जोखिम को खत्म करती है। इसके अलावा, यह आपको हर देय तिथि को याद रखने से भी बचाती है। इस विकल्प के साथ, आप बिना किसी फाइनेंशियल दबाव के लगातार कवरेज बनाए रख सकते हैं और हर समय सुरक्षित रह सकते हैं।

टैक्स लाभ : स्वास्थ्य बीमा न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है, बल्कि टैक्स लाभ भी प्रदान करता है, जो आपको पैसे बचाने में मदद कर सकता है। इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80डी के तहत, आप स्वास्थ्य बीमा के प्रीमियम पर खर्च किए गए पैसे पर कटौती का क्लेम कर सकते हैं। यह आपकी टैक्स योग्य आय को कम करता है, जिससे आपका देय टैक्स भी कम हो जाता है। स्वयं, पति/पत्नी, बच्चों और आश्रित माता-पिता के लिए चुकाए गए प्रीमियम पर यह कटौती लागू होती है। अगर आप प्रीमियम का भुगतान ईएमआई पर करना चुनते हैं, तो आपको टैक्स लाभ भी मिलेंगे और छोटे भुगतानों की सुविधा भी। टैक्स फाइल करते समय कटौती का क्लेम करने के लिए, सभी भुगतानों की रसीदें और पॉलिसी डॉक्यूमेंट को प्रमाण के रूप में ज़रूर रखें।

स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प : ईएमआई पर स्वास्थ्य बीमा उन व्यक्तियों और परिवारों के लिए एक स्मार्ट और सुविधाजनक विकल्प है, जो एक बार में बड़ी राशि का भुगतान किए बिना कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थकेयर कवरेज चाहते हैं। शुरुआत करने के लिए, अपनी हेल्थकेयर की आवश्यकताओं का आकलन करें और विभिन्न बीमा प्लान्स के बारे में जानें। नियम और शर्तों को समझें और अपने बजट के अनुसार भुगतान की आवृति चुनें। पता लगाएं कि क्या कोई अतिरिक्त शुल्क लग रहा है, पॉलिसी की कवरेज में क्या शामिल है और क्लेम कैसे करते हैं, ताकि बाद में कोई समस्या न हो। सही स्वास्थ्य बीमा प्लान और किफायती ईएमआई आपको लंबे समय के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, फाइनेंशियल सुरक्षा और मन की शांति प्रदान करते हैं। याद रखें, आज सही विकल्प चुनने से आपको भविष्य में मेडिकल एमरजेंसी के दौरान फाइनेंशियल तनाव से बचने में मदद मिल सकती है।

(लेखक बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस के हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन टीम के हेड हैं।)

नौ की राष्ट्रव्यापी हड़ताल की तैयारियों को लेकर एकजुट हुए कर्मचारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

सर्व कर्मचारी संघ, एआईयूटीयूसी व सीटू संगठनों की ओर से सर्व कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष कोशल कुमार, एआईयूटीयूसी जिला प्रधान मास्टर सुबेसिंह व सीटू के जिला सचिव रोहतास गोठवाल की अध्यक्षता में पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में शनिवार को एक बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में सर्व कर्मचारी संघ राज्य सचिव महेंद्र बोयत, एआईयूटीयूसी जिला सचिव छाजूराम रावत, जिला सचिव सर्व कर्मचारी संघ राहुल सारवान, जिला अध्यक्ष सीटू हरीराम, एआईयूटीयूसी उपप्रधान शेर सिंह, भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा सम्बंधित एआईयूटीयूसी जिला प्रधान सीताराम एवं मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन हरियाणा सम्बंधित एआईयूटीयूसी ब्लाक प्रधान माया देवी उपस्थित रहे।

नारनौल। पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में बैठक करते यूनियनों के पदाधिकारी।

उक्त बैठक मीटिंग में निर्णय लिया गया कि इन संगठनों से जुड़ी यूनियन के पदाधिकारी व सदस्य पुराना लघु सचिवालय नारनौल के सामने सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में एकत्रित होंगे तथा वहां से जुलूस के रूप में महावीर चौक होते हुए रोडवेज डिपो के सामने पहुंचकर रोडवेज कर्मचारियों के साथ एकजुटता प्रदर्शित करते हुए केन्द्र व राज्य सरकार की श्रमिक-कर्मचारी विरोधी नीतियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। अध्यक्ष मण्डल ने श्रमिक-कर्मचारियों से 9 जुलाई को प्रातः 10 बजे पुराना लघु सचिवालय नारनौल के समक्ष पार्क में पंहुचने की अपील की।

बैठक में वक्ताओं ने कहा कि भाजपा-नीत केंद्र सरकार की मजदूर-कर्मचारी विरोधी व जनविरोधी नीतियों के खिलाफ देश की 10 बड़ी केंद्रीय ट्रेड यूनियनों व स्वतंत्र फेडरेशनों के सांझे आह्वान पर आगामी 9 जुलाई को एक दिन की राष्ट्रव्यापी आम हड़ताल करने का निर्णय लिया है। उन्होंने बताया कि सरकार की तमाम मजदूर-कर्मचारी विरोधी, जनविरोधी नीतियों को वापस लेने, मजदूरों के लिए न्यूनतम वेतन 26000 रुपये मासिक करने, चार लेबर कोड को निरस्त करने, एनपीएस-यूपीएस को वापस लेने और सभी के लिए बिना शर्त पुरानी पेंशन स्कीम बहाल करने, सभी को रोजगार देने, स्थायी भर्ती के जरिये खाली पदों को भरने, सार्वजनिक क्षेत्र और सरकारी संस्थानों/ उपक्रमों/ विभागों के निजीकरण पर रोक लगाने, पिछले दरवाजे से निजीकरण के नये प्रारूप 'राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन' को खत्म करने, श्रमिकों को जब चाहे 'नौकरी पर रखने और हटाने' की निश्चित अवधि के रोजगार की नीति वापस लेने, 8 घंटे कार्य दिवस से छेड़छाड़ बंद करने, स्थायी प्रकृति के कामों में ठेका प्रथा व अस्थायी कर्मचारी भर्ती करना बंद करने, डेली वेज व कैजुअल कर्मचारियों को पक्का करने, आंगनबाड़ी, मिड डे मील, आशा सहित तमाम स्कीम वर्करों को सरकारी कर्मचारी के रूप में नियमित करने और तब तक उन्हें श्रमिक मानकर सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम वेतन देने, असंगठित क्षेत्र के सभी मजदूरों को कल्याणकारी हितलाभ और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने, निर्माण श्रमिकों के पंजीकरण व हितलाभ की प्रक्रिया सरल व भ्रष्टाचारमुक्त करने, मनरेगा मजदूरों को 800 रुपये दैनिक दिहाड़ी पर साल में कम से कम 200 दिन काम देने, बिजली (संशोधन) विधेयक-2023 को निरस्त करने व स्मार्ट मीटर लगाने बंद करने, ट्रेड यूनियन अधिकारों को सुनिश्चित करने, उद्योगों में मौजूदा श्रम कानून की सख्ती से पालना सुनिश्चित करने आदि जीवन के ज्वलंत मुद्दों पर आगामी 9 जुलाई को एक दिन की राष्ट्रव्यापी आम हड़ताल करने का आह्वान किया है।

हरियाणा पब्लिक स्कूल में भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नांगल चैधरी रोड स्थित हरियाणा पब्लिक स्कूल में शनिवार को आषाढ शुक्ल दशमी के अवसर पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र व बहन सुभद्रा की रथ यात्रा का आयोजन किया गया। उड़ीसा के पुरी में वर्षो से निकाली जा रही रथयात्रा का नारनौल शहर में धूमधाम से आयोजन किया गया।

नारनौल। रथयात्रा में शामिल होते हुए। फोटो : हरिभूमि

सर्वप्रथम पंडित धनपत शास्त्री ने पूर्ण विधि विधान पूर्वक विद्यालय की एमडी निधि वर्मा, डायरेक्टर पुष्करमल वर्मा, डीन मनोज भारद्वाज, प्राचार्य सुनील यादव, समस्त अध्यापकगण व विद्यार्थियों इत्यादि से पूजा अर्चना करवाते हुए भगवान जगन्नाथ, बलभद्र व बहन सुभद्रा की स्थापना करवाई।

एमडी निधि वर्मा ने विद्यार्थियों को बताया कि ऐसा माना जाता है कि भगवान विष्णु के अवतार भगवान कृष्ण की भूलोक यात्रा संपूर्ण होने पर देह त्यागते वक्त उनका हरदय भगवान जगन्नाथ जी की मूर्ति में ही स्थापित हो गया था और आज ही के दिन बहन सुभद्रा के कहने पर भगवान जगन्नाथ व बडे भाई बलभद्र अपनी बहन सुभद्रा को लेकर अपनी मौसी के घर गुंडीचा पहुंचे थे। विद्यालय के डीन मनोज भारद्वाज व प्राचार्य सुनील यादव ने कहा कि आज के समय में शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियों को हमारी संस्कृति व संस्कार का ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है।

अंत में भगवान की आरती के बाद सभी को प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के एमडी डॉ हितेश वर्मा, निधि वर्मा, डायरेक्टर पुष्करमल वर्मा, डीन मनोज भारद्वाज, प्राचार्य सुनील यादव व समस्त अध्यापकगण उपस्थित रहे।

बागेश्वर धाम सरकार से आएंगे आचार्य रोहित रिछारिया

नारनौल। शहर की प्रसिद्ध धार्मिक संस्था श्री राजेश्वरम परिवार द्वारा गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पंच-दिवसीय भव्य गुरु पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। आयोजन छह जुलाई से 10 जुलाई तक अग्रवाल सभा प्रांगण में दोपहर दो बजे से शाम सात बजे तक होगा। संस्था सदस्य सुरेंद्र गोयल डेरोलिया ने बताया कि यह आयोजन राजेश्वरानंद सरस्वती एवं हनुमान महाराज के परम भक्त आचार्य धीरेंद्र शास्त्री महाराज पीठाधीश्वर बागेश्वर धाम सरकार की प्रेरणा से किया जा रहा है। महोत्सव में बागेश्वर धाम सरकार के कृपा पात्र भक्तमाल आचार्य रोहित रिछारिया श्रीराम कथा और भक्तमाल पर अपनी ओजस्वी वाणी से अमृत वर्षा करेंगे। विशेष रूप से राजू दास महाराज, महंत हनुमानगढ़ी अयोध्या धाम, साध्वी भक्ती प्रभा, गुरु प्रसाद, महंत मदन मोहन दास महाराज, धीर समीर आश्रम वृंदावन और भजन प्रवाहक गोलोकवासी विनोद अग्रवाल के सुपुत्र जतिन अग्रवाल मुंबई से भजनों की अमृत वर्षा करेंगे। इसके अलावा कई अंतरराष्ट्रीय संत भी इस आयोजन में पहुंचेंगे। विशेष रूप से श्रीश्याम मंदिर जोरासी धाम से शशिकांत गुरुजी भी पधारेंगे। इस कार्यक्रम में विनित पिलानिया विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सूचना

मैं, सतीश कुमार पुत्र श्री राम अवतार वासी गांव दोंगड़ा जाट, तहसील कनीना, जिला महेंद्रगढ़, हरियाणा का स्थाई निवासी हूँ तथा बयान करता हूं कि मेरी पत्नी पिंकी व पुत्र प्रवेश तथा दीपांशु मेरे कहे-सुने से बाहर हैं तथा मनमर्जी करते हैं। मैं उन्हें अपनी तमाम चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में कोई भी व्यक्ति इनसे किसी प्रकार का लेनदेन करता है तो वह स्वयं इसका जिम्मेदार होगा। मेरा पिंकी, प्रवेश व दीपांशु से कोई ताल्लुक नहीं है ।

सार्वजनिक सूचना

मै नेतराम पुत्र भानीसहाय वासी गांव नूनी अव्वल तहसील नारनौल जिला महेंद्रगढ हरियाणा बयान करता हूं कि मेरा पुत्र हरित कुमार व उसकी पत्नी अनिता देवी मेरे साथ लडाई–झगडा करते रहते हैं व मेरे कहने सुनने से बाहर है। इसलिए मै इनको अपनी चल–अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में इनसे लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेदार होगा। मेरी व मेरे बाकि परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

सैनी क्षत्रीय सभा (रजि) महेंद्रगढ़ 123029

आम सूचना

सैनी क्षत्रीय सभा रजिस्टर्ड महेंद्रगढ़ के सभी साधारण व आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सैनी क्षत्रीय सभा महेंद्रगढ़ के आम चुनाव कार्यक्रम निम्न तिथियों के अनुसार करवाए जा रहे हैं जो भी सदस्य चुनाव में हिस्सा लेना चाहता है वह निर्धारित तिथियों के अनुसार चुनाव में भाग ले सकते हैं 01. फॉर्म भरने की तिथि 15.07.2025 से 17.07.2025, 02.आवेदन पत्रों की जांच 18.07.2025 से 19.07.2025, 03.आवेदन वापस लेने की तिथि 20.07.2025, 04. चुनाव चिन्ह जारी करने की तिथि 22.07.2025, 05. चुनाव प्रचार का समय 22.07.2025 से 01.08.2025, 06.कॉलेजियम सदस्यों के चुनाव :हेतु मतदान 03.08.2025, 07.चुनाव परिणाम 03.08.2025 देर शाम, 08.प्रधान सचिव आदि पदाधिकारियो के लिए मतदान 5.8.2025

निवेदक: नितिन यादव एडवोकेट मुख्य चुनाव अधिकारी सैनी सभा महेंद्रगढ़

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि खण्ड निजामपुर हेतु मनरेगा के तहत सोशल आडिट (कलैन्डर अनुसार) करवाने हेतु ब्लाक रिसोर्स पर्सन (BRP) की नियुक्ति (सोशल आडिट युनिट के नियमानुसार) प्रति कार्य दिसव या कलैन्डर राशि 750/- रूपए के मानदेय के आधार पर की जानी है। प्रति वर्ष कार्य दिवसों की संख्या का निर्धारण जारी किए जाने वाले सोशल आडिट कलैन्डर अनुसार होगा। अभ्यर्थी स्नातक, कम्प्युटर /MIS का ज्ञान तथा अन्ड्रोयड मोबाईल प्रयोग करने में सक्षम हो। पहले से कार्यरत VRP (Village Resource Persone) को परियता दी जाएगी। विस्तृत जानकारी एवं आवेदन प्रारूप एवं शर्तें अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय के सूचना पट्ट से प्राप्त करा जा सकता है। इच्छुक अभ्यर्थी अपना आवेदन खण्ड कार्यालय में (मनरेगा शाखा) समस्त दस्तावेजों की प्रति सहित दिनांक 07.07.2025 से 11.07.2025 को सांय 03.00 बजे तक जमा करवाना सुनिश्चित करें।

खण्ड विकास एवं पंचायत अधिकारी, निजामपुर

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि खण्ड नांगल चौधरी हेतु मनरेगा के तहत सोशल आडिट (कलैन्डर अनुसार) करवाने हेतु ब्लाक रिसोर्स पर्सन (BRP) की नियुक्ति (सोशल आडिट युनिट के नियमानुसार) प्रति कार्य दिसव या कलैन्डर राशि 750/- रूपए के मानदेय के आधार पर की जानी है। प्रति वर्ष कार्य दिवसों की संख्या का निर्धारण जारी किए जाने वाले सोशल आडिट कलैन्डर अनुसार होगा। अभ्यर्थी स्नातक, कम्प्युटर /MIS का ज्ञान तथा अन्ड्रोयड मोबाईल प्रयोग करने में सक्षम हो। पहले से कार्यरत VRP (Village Resource Persone) को परियता दी जाएगी। विस्तृत जानकारी एवं आवेदन प्रारूप एवं शर्तें अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय के सूचना पट्ट से प्राप्त करा जा सकता है। इच्छुक अभ्यर्थी अपना आवेदन खण्ड कार्यालय में (मनरेगा शाखा) समस्त दस्तावेजों की प्रति सहित दिनांक 07.07.2025 से 11.07.2025 को सांय 03.00 बजे तक जमा करवाना सुनिश्चित करें।

खण्ड विकास एवं पंचायत अधिकारी, नांगल चौधरी

नारनौल। प्रशिक्षण शिविर में भाग लेते विद्यार्थी एवं शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

सिंघानिया विश्वविद्यालय में टैली आन जीएसटी पर एकदिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

नारनौल। सिंघानिया विश्वविद्यालय बड़ी पचेरी बड़ी में टैली आन जीएसटी विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सरस्वती अकाउंटेंट्स सॉफ्टवेयर प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें आसपास के विद्यालयों के छात्र तथा स्थानीय लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन सिंघानिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रिटायर्ड आईएएस मनोज कुमार द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण युवाओं को रोजगार उन्मुख और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सहायक सिद्ध होंगे। उन्होंने छात्रों को ऐसे अवसरों का भरपूर लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षण सत्र का संचालन विशेषज्ञ प्रशिक्षक दिनेश खत्री एवं योगेश सोलंकी द्वारा किया गया। उन्होंने प्रतिभागियों को जीएसटी के अंतर्गत टैली सॉफ्टवेयर के प्रयोग की व्यावहारिक जानकारी दी तथा लाइव डेमो के माध्यम से महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझाया। सरस्वती अकाउंटेंट्स सॉफ्टवेयर प्राइवेट लिमिटेड़ के प्रमुख मनीष गुप्ता ने भी छात्रों को और अकाउंटिंग के क्षेत्र में तकनीकी दक्षता के महत्व को विस्तार से बताया। अंत में कैंपस डायरेक्टर प्रो. पीएस जस्सल ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए सभी प्रशिक्षकों, उपस्थित गणमान्य अतिथियों, विद्यार्थियों और आयोजन से जुड़े सदस्यों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। जिससे उनमें नई ऊर्जा और सीखने का उत्साह देखने को मिला। यह आयोजन छात्रों के व्यावसायिक कौशल को विकसित करने की दिशा में सिंघानिया विश्वविद्यालय की एक उल्लेखनीय पहल रही।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रमोद शास्त्री की मौसी का निधन

महेंद्रगढ़। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व नेशनल मॉडल स्कूल महेंद्रगढ़ के अध्यक्ष प्रमोद शास्त्री, पुरुषोत्तम, हीरालाल व पंकज कुमार की मौसी कृष्णा देवी धर्मपत्नी किशोरी लाल शर्मा का 65 वर्ष की आयु में निधन हुआ। एडवोकेट महेश दीक्षित व उमेश कुमार की मां कृष्णा देवी धार्मिक विचारों की महिला थी वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं आज उनका अंतिम संस्कार ग्राम जाटवास में हुआ। उनके अंतिम संस्कार में क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। उनके अंतिम संस्कार में आए लोगों ने शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी व दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की। कृष्णा देवी सहनशील व मृदु भाषी महिला थी। उनके निधन से परिवार को जो अपूर्णीय क्षति हुई है उसकी भरपाई कर पाना कठिन है।

खबर संक्षेप

युवाओं को शहीद के शौर्य से प्रेरणा लेनी चाहिए

महेंद्रगढ़। गांव खैरोली में अमर शहीद शौर्य चक्र विजेता कृष्ण कुमार की 13 वी पुण्य तिथि पर विधायक कंवर सिंह यादव ने प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित करके नमन किया। विधायक कंवर सिंह यादव ने शहीद को नमन करते हुए कहा कि सेना का हर जवान देश की रक्षा के लिए तत्पर है। शहीद कृष्ण कुमार ने देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया है। उनकी शहादत को देश हमेशा याद करेगा। युवाओं को शहीद के शौर्य से प्रेरणा लेनी चाहिए।

कॉलेज के साथ विवि मेरिट लिस्ट में भी स्थान

नारनौल। महाविद्यालय स्तर के साथ विश्वविद्यालय स्तर पर भी टॉप–10 में यदुवंशी डिग्री कॉलेज के बीकॉम आनर्स द्वितीय वर्ष के चौथे सेमेस्टर में सुधा पुत्री राजेन्द्र ने प्रथम स्थान, अंशु पुत्री वीरेन्द्र ने आठवां स्थान, नैन्सी पुत्री सुनील कुमार ने नौवां स्थान प्राप्त किया। श्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने बताया अब तो यकीन करना होगा क्योंकि हमने अपनी मेहनत से सभी को विश्वस्त करने का कार्य किया है। यदुवंशी जैसे परीक्षा परिणाम कहीं और से प्राप्त नहीं हो सकते, इसलिए हमें आज बहुत खुशी हो रही है।

कनीना में चलाई जा रही सफाई व्यवस्था: लोढा

कनीना। स्वच्छता बनाए रखने को लेकर नगरपालिका प्रशासन कनीना की ओर से सफाई अभियान चलाया गया। नपा चेयरपर्सन डॉ रिंपी लोढा व नपा सचिव कपिल कुमार ने बताया कि मॉनसून के समय तरह-तरह के विषाणु एवं जीवाणु पनप जाते हैं। जिनके काटने से बिमारी की अत्यधिक संभावना रहती है। बिमारी से बचने के लिए नगर में सफाई जरूरी है। सफाई बनाए रखने के लिए नपा कर्मचारी प्रतिदिन विभिन्न सडक मार्गों तथा वार्डों में सफाई कर रहे हैं। मानसून को देखते हुए शिक्षण संस्थानों के समीप व स्लम एरिया में सफाई का विशेष फोकस किया गया है।

कनीना में 12 को राष्ट्रीय लोक अदालत

कनीना। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन नरेंद्र सूरा के दिशानिर्देशन में आगामी 12 जुलाई, शनिवार को एसडीजेएम कोर्ट कनीना में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। बार एसोसिएशन कनीना के प्रधान मंजीत यादव ने हुए बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में वादी एवं प्रतिवादी दोनों पक्षों की सहमति से परिवादों का निपटान किया जायगा। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में मुख्यतः वैवाहिक पारिवारिक विवाद, अपराधिक मामले जो की मिश्रित हों, भूमि अधिग्रहण, बैंक रिकवरी, पेंशन कॉन्ट्रैक्टस संबंधी केसों की सुनवाई कर निपटान किया जाएगा।

जिला प्रशासन की अनेदखी व सरपंच की मनमानी के खिलाफ रोष

तीसरे दिन भी भूख हड़ताल पर पंच, प्रशासन ने नहीं ली कोई सुध

पंच ने कहा, वह डेढ़ साल से समाधान शिविर में शिकायत दे रहे हैं, लेकिन अधिकारी केवल एक दूसरे के पास भेजकर मामले में टाल मेटोल कर रहे है

महेंद्रगढ़। भूख हड़ताल पर बैठे पंच सुरेंद्र सिंह। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

गांव माजरा खुर्द के पंच सुरेंद्र सिंह जिला प्रशासन की अनेदखी व सरपंच की मनमानी के खिलाफ तीसरें दिन भी भूख हड़ताल पर रहे। जिला प्रशासन के किसी अधिकारी ने उनकी सुध नहीं ली। पंच सुरेंद्र सिंह ने जिला प्रशासन की ओर आयोजित किए जाने वाले समाधान को केवल दिखावा बताया है। उनका कहना है कि वह डेढ़ साल में समाधान शिविर में शिकायत दे रहे हैं, लेकिन अधिकारियों केवल एक दूसरें के पास भेजकर टाल मेटोल कर रहे है। उन्होंने बताया कि पांच जून को आरटीआई के माध्यम से सूचना मांगी थी। उन्होंने पूर्व सरपंच भीमसिंह से वर्तमान पंचायत द्वारा चार्ज लेते समय बैंक खाते की कॉपी, पंचायत खाते की एफडी, पंचायत के लेजर रजिस्टर के अनुसार की सत्यापित प्रति, जनवरी 2023 से जून 2023 तक पंचायत फंड से किए गए प्रस्ताव की कॉपी, बिल व कूटेशन की सत्यापित कॉपी, गांव में ब्लॉक समिति व जिला परिषद से किए गए विकास कार्यो की कॉपी, ब्लॉक समिति व जिला परिषद फंड का पैसे खर्च करने वाले अधिकारी का पद और नाम, विधायक फंड से ग्राम पंचायत में हुए खर्च का ब्यौरा, विधायक फंड के लिए दिए प्रस्ताव की प्रति, विधायक फंड खर्च के लिए प्रस्ताव, बिलों व मद की सत्यापित कॉपी तथा ग्राम पंचायत द्वारा शराब ठेका निषेध का प्रस्ताव की कॉपी मांगी गई थी। लेकिन ग्राम पंचायत की ओर से दो साल बीत जाने के बाद उन्हें सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई। इसको लेकर बीडीपीओ ने 5 मार्च 2024 को पत्र भी जारी किया था। आरटीआई के माध्यम से जिला प्रशासन द्वारा जानकारी नहीं देने पर उन्होंने चंडीगढ के अधिकारियों से जानकारी मांगी है।

इन्होंने समर्थन दिया

ग्राम पंचायत पर आरोप लगाते हुए कहा कि पंचायत की ओर से केवल 9 पेड़ों की कटाई अनुमति ली गई थी। लेकिन पंचायत की ओर से 20 पेड़ काटे गए है। इसके अलावा पिछली पंचायत द्वारा गांव में लगाई सोलर लाईट के मामले में भारी गबन हुआ है। शनिवार को राघव, मुकेश माजरा खुर्द, सुमन माजरा खुर्द, अशोक कुमार माजरा खुर्द, जगदीश महायच, भूप सिंह ढाणी फोगाट, रमेश बवाना, बलजीत चितलांग, ब्रह्मानंद वाल्मीकि, राजाराम सुरजन वास, ईश्वर सुरजन वास, सुरेश, अशोक माजरा खुर्द, धर्मवीर सिंह माजरा खुर्द, वेदप्रकाश माजरा खुर्द, महेंद्र सिंह नंबरदार माजरा खुर्द, पवन कुमार माजरा खुर्द, शशिकांत माजरा खुर्द, संदीप, निशा मेघनवास, नरदेव माजरा खुर्द, आदि ग्रामीणों ने धरना स्थल पर पहुंचकर अपना समर्थन दिया।

मॉडर्न स्कूल में हिन्दी सुलेख लेखन प्रतियोगिता आयोजित

- प्रतियोगिता में कक्षा एक से पंकूल ने प्रथम, लवन्या ने द्वितीय व विंद्रा ने तृतीय स्थान पर रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

स्थानीय मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में शनिवार को प्राइमरी विंग में हिन्दी सुलेख लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्राइमरी विंग के हैंड राकेश यादव ने बताया कि प्रतियोगिता के दौरान निर्णायक मंडल की भूमिका स्कूल प्राचार्य प्रदीप कुमार व भूपेंद्र सैनी ने निभाई। प्रतियोगिता में कक्षा प्रथम से पंकूल ने प्रथम, लवन्या ने द्वितीय व विंद्रा ने तृतीय, कक्षा दूसरी से मैंशु ने प्रथम, सोनम ने द्वितीय व यशिका ने तृतीय, कक्षा तीसरी से अद्विती ने प्रथम, प्रिंस ने द्वितीय व वंशीका ने तृतीय कक्षा चौथी से मानवी ने प्रथम, यशिका ने द्वितीय व यमन ने तृतीय, कक्षा पांचवी से सारिका ने प्रथम, नेहा ने द्वितीय व स्वर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस मौके पर विजेता प्रतिभागियों को प्रशास्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य प्रदीप कुमार तंवर ने कहा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है। हमें हिन्दी बोलने में किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता हमें जीवन में अपना लक्ष्य निर्धारित करने में सहायता करता है।

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी।

जीवन में हमें कभी भी प्रतियोगिता से पीछे नहीं भागना चाहिए, बल्कि चुनौतियों से हमें सीखना चाहिए और जीतने की कोशिश करना चाहिए। प्रतियोगिताएं वर्षों से एकत्रित ज्ञान और कौशल को प्रदर्शित करने के लिए एक शानदार मंच प्रदान करती हैं।

इस तरह, प्रतियोगिताओं छात्रों के लिए आत्म-मूल्यांकन का एक बड़ा स्त्रोत साबित हो सकती हैं और उनके अनुभव और कौशल को और आगे बढ़ाने में मदद कर सकती है। इस तरह के आयोजन आगे भी होते रहेंगे।

शहीद देश के आइकन : अतरलाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शहीद देश के आइकन होते हैं। उनकी स्मृति में मूर्ति स्थापित करना, समारोह, मेले, खेल प्रतियोगिता, भंडारे तथा जागरण आयोजित करना सराहनीय कार्य हैं। शहीदों तथा उनके परिवारों का सम्मान करना समाज का कर्तव्य है।

उक्त विचार बहुजन समाज पार्टी के नेता समाजसेवी अतरलाल एडवोकेट ने अटाली की ढ़ाणी में शहीद उपनिरीक्षक चन्द्रभान यादव की मूर्ति अनावरण के अवसर पर शहीद को माल्यार्पण करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि ढ़ाणी अटाली निवासी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में उपनिरीक्षक के तौर पर तैनात चन्द्रभान यादव ने 47 वर्ष की आयु में जम्मू कश्मीर, श्रीनगर क्षेत्र में आतंकवादी दुश्मनों से लोहा लेते हुए 16 मार्च 1991 को शहादत दी थी। अब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में सेवारत उनके सुपुत्रों कैलाशचंद, धर्मबीर तथा अशोक कुमार ने अपने वीर शहीद पिता की स्मृति में मूर्ति स्थापित कर गौरवशाली कार्य किया है।

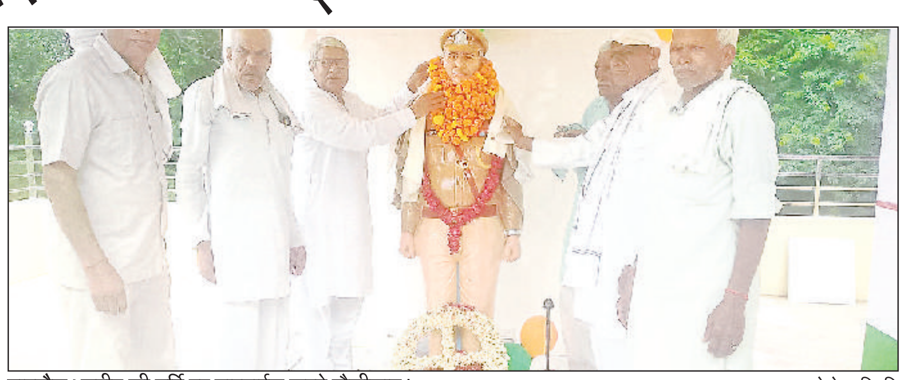

नारनौल। शहीद की मूर्ति पर माल्यार्पण करते मौजीजान। फोटो : हरिभूमि

इस दौरान केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल से पधारे उक्त कमांडेट मनोज उनके सहयोगी जवानों ने शहीद परिवार को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। उपस्थित जनों ने सरकार तथा जिला प्रशासन से गांव के मार्ग का नाम शहीद चंद्रभान के नाम पर रखने की मांग की।

शहीद परिवार द्वारा भंडारा आयोजित किया गया। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर मार्केट कमेटी अटेली की सचिव सुनिता, हरिसिंह, निहाल सिंह, मास्टर विरेन्द्र, कैलाशचंद, अशोक कुमार, यशपाल यादव, भागसिंह चेयरमैन, कैलाश सेठ, संजय यादव, बलवंत सिंह, राकेश, सोनू सहित अनेक गणमान्यों ने शहीद की मूर्ति पर माल्यार्पण कर नमन किया।

हैप्पी स्कूल के प्रणव छोक्कर ने रिसर्च करिकुलम में प्राप्त किए 98.3% अंक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र प्रणव छोकर पुत्र डॉ. पवन कुमार ने 16 जून को नासा एसोसिएशन द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय नासा ओपन साइंस 101 रिसर्च करिकुलम प्रतियोगिता में 98.3 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। इस कार्यक्रम में विभिन्न देश के बच्चों ने पांच असाइनमेंट प्रस्तुत किया जो 12-12 अंकों के निर्धारित हुए थे। साथ ही इस परीक्षा के बाद 2026 के लिए नासा में इंटर्नशिप के लिए प्रणव छोकर को स्वीकृति भी प्राप्त हुई है। प्रणव छोकर की सफलता का सिलसिला लगातार चलता रहा। छह जून को ही इंटेल टेक्नोलॉजी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा आयोजित अंक फॉर एंटरप्रेन्योरशिप में अपना बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए प्रमाण पत्र प्राप्त किया। दूसरी ओर यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड द्वारा आयोजित एथिकल लीडरशिप कोर्स के तहत 12 कोर्स को पार करते हुए सफलता अर्जित की तथा प्रमाण पत्र प्राप्त किया। यह कार्यक्रम 13 जून को आयोजित हुआ। टाटा फॉरेज द्वारा 11 जून को आयोजित कोर्स में हिस्सा लेते हुए प्रणव छोकर ने न केवल ए आई का सही प्रयोग बताया। प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल, प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल और मैनेजर चंचल अग्रवाल ने कहा कि अब हमारे विद्यालय के विद्यार्थी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

महेंद्रगढ़। छात्र प्रणव को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हैप्पी स्कूल के चित्राक्ष का शूटिंग में राष्ट्रीय स्तर हुआ चयन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

शहर के डुलाना रोड स्थित हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल महेंद्रगढ़ के छात्र चित्राक्ष का दिल्ली में दो से चार जुलाई तक हरियाणा राइफल एसोसिएशन द्वारा आयोजित 10 वीं हरियाणा शूटिंग चैंपियनशिप में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के चयन हुआ है। छात्र चित्राक्ष ने 400 में से 365 स्कोर किया। चित्राक्ष के कोच कैप्टन रामकिशन यादव ने बताया कि चित्राक्ष अपनी पूरी मेहनत और लगन के साथ अपना शत प्रतिशत देने का प्रयास करता है और सफल भी होता है। इतना ही नहीं एकलव्य शूटिंग अकादमी द्वारा आयोजित खेलो महाकुंभ में भी चित्राक्ष ने शीर्ष 3 खिलाड़ियों में अपना नाम दर्ज करवाया था। विंग प्रभारी ईश्वर सिंह और प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल ने प्रशंसा पूर्ण शब्दों में कहा कि निशानेबाजी विद्यार्थियों के लिए कई तरह से फायदेमंद हो सकती है। यह न केवल एक खेल है, बल्कि यह एकाग्रता, आत्म-अनुशासन, और आत्मविश्वास जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में भी मदद करता है। विद्यालय के प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल, मैनेजर चंचल अग्रवाल, संचालक सुभाष चंद्र अग्रवाल और उपसंचालिका ने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

छात्र चित्राक्ष।

जिले के 455 प्राथमिक विद्यालयों में अभिभावक–शिक्षक बैठकें आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शिक्षा विभाग की ओर से जिला के सभी 455 प्राथमिक विद्यालयों में अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। इसमें ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान बालवाटिका-III से कक्षा पांचवी तक के विद्यार्थियों को दिए गए रचनात्मक एवं व्यवहारिक गृहकार्य का मूल्यांकन किया गया। ज्ञात हो कि ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान विद्यार्थियों को अनुभव आधारित गृहकार्य दिया गया था। जिससे न केवल उन्हें वास्तविक जीवन से जुड़ने का मौका मिला बल्कि उनकी रचनात्मकता, स्वायत्तता और जिज्ञासा को भी प्रोत्साहन मिला।

इस गतिविधि आधारित कार्य को विद्यार्थियों को अपने परिवार के बड़े सदस्यों के सहयोग से पूरा करना था ताकि अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी को विद्यार्थियों की शिक्षा में बढ़ावा दिया जा सके। इसी के मद्देनजर पांच जुलाई 2025 को सभी राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अभिभावक शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया। इस आयोजन की सफलता के लिए सभी क्लस्टर मुखिया, बीआरपी और एबीआरसी को अभिभावक-शिक्षक बैठक के दौरान मॉनिटरिंग का दायित्व भी सौंपा गया। सभी राजकीय प्राथमिक विद्यालय के मुखिया बैठक के आयोजन के बाद अपने क्लस्टर मुखिया को एक विस्तृत रिपोर्ट भेजेंगे और क्लस्टर मुखिया इस खंड कार्यालय को संयुक्त रूप से भेजेंगे। इस बैठक के दौरान विभिन्न रोचक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

नारनौल। प्राथमिक स्कूल में आयोजित होती अभिभावक शिक्षक बैठक

खेल महाकुंभ ट्रायल्स में विद्या देवी इंटरनेशनल स्कूल के खिलाड़ी छाए

- विद्यालय की छात्रा भारती (बिहाली) और छात्र सचिन (सैदपुर) का चयन जिला स्तरीय कबड्डी टीम में किया गया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

गत तीन–चार जुलाई को सतनाली में हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित ओपन वर्ग खेल महाकुंभ के अंतर्गत संपन्न हुए जिला स्तरीय ट्रायल्स में विद्या देवी इंटरनेशनल स्कूल अटेली के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन कर जिले में विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय की छात्रा भारती (गांव बिहाली) और छात्र सचिन (गांव सैदपुर) का चयन जिला स्तरीय कबड्डी टीम में किया गया है।

वहीं गर्वित (गांव सलीमपुर) ने लंबी कूद प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त कर सराहनीय प्रदर्शन किया। 200 मीटर दौड़ में भी विद्यालय के छात्रों ने ओपन वर्ग में अपनी-अपनी हीट में अपना दबदबा बनाया। कपिल (गांव पृथ्वीपुरा) और अमित (गांव सैदपुर) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त विद्यालय की पूर्व छात्रा रितिका (गांव बेगपुर) ने 20 किलोमीटर रेस वॉक (ट्रैक) में प्रथम स्थान हासिल कर विद्यालय के गौरव में वृद्धि की। प्राचार्य ने सभी विजेता खिलाड़ियों और प्रशिक्षक ललित डाबड़ को बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धियां विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, समर्पण और विद्यालय के खेल प्रशिक्षण की गुणवत्ता का परिणाम हैं। विद्यालय प्रबंधन ने सभी प्रतिभागियों को आगामी राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दी।

गौरव और चंचल ने दहेज रहित शादी कर समाज को दिया संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

अटेली क्षेत्र के गांव गुजरवास निवासी अनिल कुमार पुत्र बजरंगलाल अग्रवाल ने अपने बेटे गौरव की शादी कोसली निवासी स्व. अनिल कुमार की पुत्री चंचल से बिना दहेज के संपन्न कर समाज को एक सकारात्मक संदेश दिया है। गौरव और चंचल दोनों ही स्नातक हैं और दहेज रहित शादी करने का फैसला लिया था। उनकी शादी चार जून शुक्रवार रात्रि को सम्पन्न हुई।

इस शादी की विशेषता यह रही कि शादी में मात्र एक रुपया और नारियल लेकर ही शादी की रस्में पूरी की गईं। हालांकि दोनों ही पक्षों द्वारा मेहमानों का अच्छा आदर सत्कार किया गया और शादी का जश्न मनाया गया, लेकिन शादी में दहेज के रूप में कोई वस्तु नहीं ली गई, जो कि एक सराहनीय कदम है। गौरव के पिता अनिल का कहना है कि बेटा गौरव सुशिक्षित एवं समझदार युवक है, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए हमेशा तैयार रहता है। उसने अपनी शादी में दहेज न लेने का फैसला करके एक मिशाल पेश की है। उल्लेखनीय है कि सेठ बजरंगलाल प्रमुख समाज सेवी एवं न्याय प्रधान लाला भगवानदास के पुत्र तथा ब्लॉक समिति के पूर्व चेयरमैन जगदीश प्रसाद गुप्ता के छोटे भाई हैं, जिनका सामाजिक रचनात्मक कार्यों में विशेष योगदान रहा है।

गौरव और चंचल।

स्व राव श्योचंद राम जी कि तृतीय पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

36 यूनिट किया रक्तदान, नेत्र चिकित्सा कैंप में 256 ने करवाई जांच, 26 को मिली डॉक्टरेट की मानद उपाधि

- सभा की अध्यक्षता हरफूल सिंह यादव आईएएस ने की

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

राव श्योचंद राम मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट निहालोठ की ओर से शनिवार स्व. राव श्योचंद राम की तृतीय पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के तौर पर झुंझुनूं के जिला कलेक्टर अरुण गर्ग मौजूद रहे। अध्यक्षता हरफूल सिंह यादव आईएएस ने की। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व सेशन जज राकेश कुमार, सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेरी बड़ी के अध्यक्ष एवं रिटायर्ड आईएएस मनोज कुमार गर्ग, दा राजस्थान स्कूल कोटपूतली के डायरेक्टर मधुर यादव, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ छोटेलाल गुर्जर, नोबल शिक्षण समूह के डायरेक्टर डॉ संदीप नेहरा, डॉ रामानंद शर्मा, डॉ रहिस यादव, राहुल पूरणमल सुरोलिया, प्राचार्य सुरेंद्र कुमार यादव, राजेंद्र सिंह यादव, यादव महासभा के जिला अध्यक्ष रामचंद्र बोहरा बुहाना, हरिकिशन यादव, शकुंतला यादव, विजय कुमार पांडे, योगाचार्य ढाका राम सप कोटा, बाबूलाल यादव, दिनेश यादव, दारा सिंह, पशुपति कुमार शर्मा और ज्योतिष आचार्य कौशल दत्त शर्मा थे। कार्यक्रम संचालन डॉ अनिल शर्मा ने किया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि भारतीय संस्कृति को मानने वाले परिवार के बड़े बुजुर्गों का पूरा मान सम्मान करते है। यह नजारा हमें आज यहां दिखाई दे रहा है। यह सब राव श्योचंद राम की ओर से बच्चों को दिए संस्कार का नतीजा है। जो उनका परिवार पुण्य तिथि पर एक स्थान पर एकत्रित होकर सामाजिक कार्यों को आगे बढ़ा रहे है। अब की युवा पीढ़ी को इस परिवार से यह सीख लेनी चाहिए ताकि हर परिवार सुख दुख में साथ खड़ा दिखाई दें।

नारनौल। स्मारिका का विमोचन करते अतिथि। फोटो : हरिभूमि

स्मारिका का विमोचन भी किया गया

संयोजक डॉ उमराव सिंह यादव एडवोकेट ने बतायाइस अवसर पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 36 यूनिट रक्तदान हुए। निशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर इसमें 256 व्यक्तियों की जांच की गई तथा 20 व्यक्तियों का ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। नि:शुल्क दंत चिकित्सा शिविर में 87 व्यक्तियों की जांच की गई। छात्रवृत्ति वितरण, प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम तथा गांधी पीस फाउंडेशन, नेपाल द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में चयनित 26 लोगों को डॉक्टरेट की मानद उपाधि वितरण कि गई। कार्यक्रम को जिला कलेक्टर झुन्झनूं, हर फूल सिंह यादव आईएएस, डॉक्टर मनोज कुमार गर्ग, डॉक्टर संदीप नेहरा, शकुंतला यादव डॉ दारा सिंह , डॉ पूरणमल सुरोलिया ने भी संबोधित किया। इस दौरान प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

विशेषः विश्व जनसंख्या दिवस
11 जुलाई

पिछले दो-तीन दशकों में शहरी जनसंख्या के अनियंत्रित रूप से बढ़ने की वजह से लोगों का जीवन समस्याओं से घिरता जा रहा है। इससे साफ हवा-पानी की कमी, ट्रैफिक जाम, रहने के लिए असुविधाजनक आवास समेत कई तरह की परेशानियों के साथ लोग जीने के लिए बाध्य हैं। आने वाले वर्षों में उत्पन्न होने वाले गंभीर संकटों से बचने के लिए इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करना होगा।

जीवन कठिन बना रही शहरों की बढ़ती जनसंख्या

कवर स्टोरी/शैलेंद्र सिंह

भारत में तेजी से बढ़ते शहरीकरण ने लोगों के लिए आर्थिक अवसर तो पैदा किए हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इससे लोगों के जीवन की गुणवत्ता में बहुत गिरावट आई है। यानी बढ़ते शहरीकरण ने शहरों में रहने वाले लोगों के जीवन को बहुत तकलीफदेह बना दिया है। ये पूरी दुनिया की समस्या नहीं बल्कि भारत और कुछ अन्य विकासशील देशों की ही है, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप में बांग्लादेश और पाकिस्तान भी शामिल हैं।

शहरों में नागरिक सुविधाओं की कमी

आजादी के बाद देश में तेजी से शहरीकरण बढ़ा और इस दौरान शहर, देश के आर्थिक अवसरों का केंद्र बन कर भी उभरे। लेकिन भारत में शहरों की तरफ गांवों से बहुत तेज पलायन हुआ, जिसने शहरों में जीवन जीने की स्थितियों को बहुत गहरे तक प्रभावित किया है। नागरिक सुविधाओं का देश के लगभग हर शहर में अभाव है। आज देश का शायद ही कोई ऐसा शहर हो, जो पूरी तरह साफ-सुथरा, खुला-खुला और नागरिक सुविधाओं से भरपूर हो। हर शहर में कुछ इलाके तो बहुत अच्छे हैं, लेकिन सभी शहरों के ज्यादातर हिस्से सुविधाओं की नजर से समस्याओं से ग्रस्त दिखते हैं। चाहे मुंबई हो, दिल्ली हो, बेंगलुरु हो या हैदराबाद। देश और दुनिया के ये बड़े-बड़े शहर आज बड़ी-बड़ी उपलब्धियों के गढ़ तो हैं, लेकिन इन बड़े शहरों में बहुसंख्यक लोग भीषण परेशानियों के बीच रह रहे हैं।

अनियोजित शहरीकरण

अपने देश में 80 के दशक के बाद से इतना तेज शहरीकरण हो रहा है कि देश का कोई भी शहर अपनी बढ़ने वाली जनसंख्या को ध्यान में रखकर नगर नियोजन का काम नहीं कर पा रहा है। हर शहर अगले 10 सालों तक जितनी

जनसंख्या का अनुमान लगाकर नियोजन करता है, जनसंख्या हमेशा उससे दो से तीन गुना बढ़ जाती है। यही कारण है कि भारत के सभी बड़े शहर अनियोजित शहरीकरण की समस्या से जूझ रहे हैं। यहां तक कि कानपुर, लुधियाना, भोपाल, अमृतसर, कोल्हापुर और राजकोट जैसे मझौले शहर भी जनसंख्या के दबाव से इस कदर अव्यवस्थित हो गए हैं कि इनकी आधारभूत संरचना के मुकाबले कई गुना ज्यादा इन पर जनसंख्या का दबाव है। दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगर लाख प्रयासों के बावजूद पिछले कई दशकों में अपने शहर की झुग्गी बस्तियां नहीं खत्म कर सके और न ही इन झुग्गी बस्तियों को साफ पानी, सीवर या बिजली की सुविधा दे सके हैं।

बढ़ते ट्रैफिक में फंसे शहर

आवास और बिजली, पानी की समस्या तो शहरों में है ही, लगभग सभी शहर आज सबसे बड़ी जिस समस्या से जूझ रहे हैं, वह है-सड़कों पर वाहनों की बेतहाशा वृद्धि। अंधाधुंध बढ़े वाहनों के कारण बेंगलुरु और मुंबई जैसे शहर तो थम से गए हैं। बेंगलुरु में पीक आवर्स में सड़कों पर यातायात बिल्कुल रेंगता है। 10 किलोमीटर की दूरी अकसर लोग कार से डेढ़ से दो घंटे में तय कर पाते हैं। यहां की सड़कें बिल्कुल चोकड हो गई हैं, उन पर क्षमता से 300 फीसदी से ज्यादा वाहन दौड़ रहे हैं। इसीलिए आज वहां की सबसे बड़ी समस्या ट्रैफिक की है। इससे भी खराब दशा मुंबई की है। मुंबई में पीक आवर्स में सड़क यातायात की रफ्तार 5 से 10 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। कमोबेश सभी शहरों का यही हाल है। यही वजह है कि आज हर एक घंटे में भारत के सिर्फ शहरों में 150 से लेकर 180 लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं।

नागरिक सुविधाओं का अभाव

देश में बड़े शहर तेजी से फैल रहे हैं, जहां स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, कचरा प्रबंधन, सीवर और सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं हर किसी के लिए नहीं हैं। सिर्फ कुछ लोगों के लिए ही हैं। शहरों की कुछ कालोनियों में ही नियमित रूप से साफ पानी आता है, सड़कें सपाट और चौड़ी हैं, स्कूल, अस्पताल आदि की सुविधाएं हैं। जबकि शहरों के बड़े हिस्से इन सुविधाओं से वंचित हैं। यही कारण है कि नागरिक सुविधाओं के नजरिए से देश के बड़े शहरों में पर्यावरणीय संकट भी विकट है। पिछले दो दशकों में लाखों की तादाद में पेड़ काटे गए हैं। बस्तियों के बीच मौजूद तालाब, नाले आदि सब पाट दिए गए हैं। शहरों के बीच से बहने वाली नदियों को सीवर में तब्दील कर दिया गया है। यही कारण है कि देश के बड़े शहर, वायु प्रदूषण, जल भराव, हीट वेव और घटते भू-जल स्तर की समस्याओं से दो चार हैं।

जीवन की गुणवत्ता में गिरावट और तनाव

देश के शहरों में आम लोगों का जीवन जिंदगी की गुणवत्ता से जंग कर रहा है। बहुसंख्यक शहरी लोगों के जीवन में मजबूत सामाजिक संबंध नहीं रहे। समय और जगह की कमी है। मानसिक बीमारियों का रेला है और खालीपन व असुरक्षा का लगातार घेरा बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण लोगों के आम जीवन में जबर्दस्त सामाजिक तनाव और असमानता व्याप्त है। कुल मिलाकर भारत में पिछले चार दशकों में जनसंख्या का जो तेज शहरीकरण हुआ है, उसके कारण हमारे शहरों की व्यवस्था को बनाए रखना बड़ी चुनौती बन गया है। *

कोठरियों में रहते लोग

यूं तो हर शहर में कुछ चमचमाती हुई इमारतें होती हैं, कुछ बड़े-बड़े बंगले होते हैं। लेकिन शहरों का 70 से 75 फीसदी हिस्सा घरों का नहीं, कोठरियों या छोटे-छोटे दड़बों का जंगल बन गया है। मध्यम और निम्न वर्ग के लिए सस्ते घरों में गरिमामय आवास की कल्पना नहीं की जा सकती। मुंबई में तो 250 से 300 फीट के एक कमरे वाले फ्लैट लेना भी सपने जैसा हो चुका है, क्योंकि ये छोटे-छोटे दड़बे भी 40 से 50 लाख रुपए के मिलते हैं। भारत के लगभग सभी शहरों में प्राइवेट बिल्डर फ्लैट्स और कॉलोनियों की भरमार है, जहां रहने के लिए आवास को गरिमामय बनाने का कोई मापदंड नहीं है। यहां झुग्गियां, किराए के लिए मकान और अनधिकृत कॉलोनियों की अंतहीन रेंज हैं। दिल्ली में 80 से 90 लाख लोग अनधिकृत कॉलोनियों में और 30 से 35 लाख लोग झुग्गी बस्तियों में रहते हैं। जहां लोगों को न तो भावनात्मक सुरक्षा है और न ही मनोवैज्ञानिक निजता।

बदलाव / नरेंद्र शर्मा

इसमें संदेह नहीं कि आज के दौर में लगभग हर क्षेत्र में एआई की घुसपैठ बढ़ रही है। साहित्य, संगीत और कला में भी इसकी एंट्री हो चुकी है। लेकिन लाख कोशिश के बाद भी इससे निर्मित आर्ट प्रोडक्ट, हमारे मन को स्पर्श नहीं कर पाता है।

मन को नहीं छू पाता एआई का आर्ट प्रोडक्ट

आज पूरी दुनिया में इस आशंका का सवाल गहराता जा रहा है कि क्या एआई, कला से उसकी स्वाभाविक कल्पनाशीलता, मौलिकता और कलात्मकता छीन रही है? दरअसल, कला का मूल स्वभाव सृजन है। ऐसा सृजन, जो व्यक्ति की भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभवों और कल्पनाओं से उपजता है। चित्रकला, संगीत, साहित्य, मूर्तिकला या रंगमंच। ये सभी विद्याएं मानवीय कल्पना शक्ति का विस्तार हैं। विविध रूपीय विस्तार। लेकिन अब एआई द्वारा कुछ ही सेकेंड में चित्र बनाए जा रहे हैं, कहानियां लिखी जा रही हैं, संगीत रचा जा रहा है, तो क्या ये सारी एआई से पैदा होने वाली कलाएं उस मानवीय कल्पनाशीलता की बराबरी करती हैं? यह सवाल इसलिए भी जरूरी है कि अगर वास्तव में ऐसा होता है तो लगता है कि आजतक के मानव विकास क्रम को मशीन यानी एआई ने एक झटके में अर्थहीन कर दिया है। लेकिन यह सोचना सही नहीं है।

भावनाहीन होते हैं एआई प्रोडक्टः एआई टूल हजारों पुराने चित्रों के डेटा के आधार पर नई पेंटिंग क्षणभर में बना दे रहे हैं। आप अगर इन एआई टूल्स से कहते हैं कि एक महिला जो समुद्र की लहरों से बनी है और जिसकी आंखों में तारे झिलमिला रहे हैं, ऐसी पेंटिंग बनाओ तो ये टूल्स एक क्षण में यह पेंटिंग्स बना करके हाजिर कर देंगे। लेकिन क्या ये पेंटिंग्स उस कलाकार की पेंटिंग जैसी होगी, जो समुद्र किनारे अपना पेंटिंग स्टैंड लगाए घंटों लहरों से आंखमिचौली करते हुए अपनी कल्पना में रंग भरता है। जी नहीं, बिल्कुल नहीं होगी। इस कलाकार की पेंटिंग्स में जो कलाकृति उभर कर आएगी, वह भावनाओं से संवाद करेगी। एआई की कल्पना ऐसा नहीं कर सकती। कलाकार की बनाई गई पेंटिंग संभावनाओं का आंकड़ा नहीं होगी, क्योंकि वह पहले से दुनिया में मौजूद किसी पेंटिंग की प्रतिकृति नहीं गढ़ रहा होगा, उसके मन में एक नई ही छवि मूर्तवत हो रही होगी, जो पहले नहीं होगी। जिसकी आंखों में कलाकार की भावनाएं, संवेदनाएं सब कुछ बोल रही होंगी। लेकिन एआई को यह सब नहीं करना। उसे अपने डाटा स्टोर में मौजूद आंकड़ों के मेल से एक नई फोटो कॉपी भर गढ़नी है। फर्क सिर्फ इतना होगा कि एआई किसी एक कलाकृति की बजाय बहुत सी कलाकृतियों को आपस में मिक्स करके उनसे एक नई कलाकृति निर्मित करने का भ्रम भर रचेगा। इसलिए कहा जा सकता है कि एआई कला का पुनरोत्पादन तो कर सकता है पर कला सृजन नहीं कर सकता। इसलिए एआई कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता नहीं छीन सकता।

अनुभूति को नहीं दे सकता शब्दः अब जीपीटी मॉडल हिंदी और अंग्रेजी में आदेश पर कविताएं लिख रहे हैं। मसलन, आप उनसे कहें एक प्रेम कविता लिखो, जिसमें बारिश भी हो, मन का उल्लास भी हो, तारे सितारे छूने की कल्पनाशीलता भी हो, तो वह शब्दों के उस ढांचे में जिसे कविता कहना कहीं से उचित नहीं होगा, में डाल तो देगा, लेकिन वे शब्द कभी दिल को नहीं छुएंगे। यह एक किस्म की मशीनी शब्द उत्पाद होगा। ऐसी कविता न कवि को खुशी देगी और न ही कविता सुनने वालों को कहीं से प्रेरित कर सकेगी। अगर यही प्रेम कविताएं होंगी, तो फिर कविता का कोई मतलब नहीं रह जाएगा। इसलिए एआई कुछ भले कर लें या चाहे करता दिखे, लेकिन वह न तो इंसानी भावनाओं की नकल कर सकता है और न ही इंसानी अनुभूति को शब्द या कैनवास में उतार सकता है। एआई के लिए बारिश एक गतिविधि भर है और किसी कवि या कलाकार के लिए बारिश एक समूचा जीवन है, जीवन धड़कन है और उसकी एक-एक बूंद पर उसकी लाखों अनुभूतियों का बसेरा हो सकता है। कवि या कलाकार की रचना केवल शब्दों या रंगों का संगठन भर नहीं होगा, वो अनुभूति की एक जीवंत दुनिया होगी। इसलिए एआई कितनी भी तेज रफ्तारी से कला की प्रतिकृतियां रचने में चौंका रहा हो, पर कभी दिल और दिमाग को झंकृत नहीं कर पाएगी।

बनी रहेगी कला की जीवंतताः एआई के बारे में यही बात संगीत रचना, थिएटर और अभिनय आदि पर भी लागू होती है। एआई का कोई टूल किसी रंगमंच के अभिनेता की जगह नहीं ले सकता। एआई की सजगता, उसकी मशीनी चातुरी कभी किसी नाटक की स्क्रिप्ट की जगह नहीं ले सकती। एआई कला से या कलाकारों से उनकी कल्पनाशीलता या जीवंतता की अनुभूति कभी नहीं छीन सकती। *

जीवनशैली
भूपेंद्र भारतीय

सही नहीं हर बात पर साधे रहना चुप्पी

जिस तरह बेवजह और जरूरत से ज्यादा बोलना सही नहीं होता, उसी तरह जरूरत के समय ना बोलना या हमेशा चुप्पी साधे रहना भी नुकसानदेह होता है। इस मामले में सोच-समझकर एक संतुलन की जरूरत होती है।

मानव जीवन की सबसे सुंदर विशेषता है, उसे ईश्वर द्वारा मिली अभिव्यक्ति की शक्ति। अभिव्यक्ति को एक शक्ति ही माना जाना चाहिए, जो इस ब्रह्मांड में सिर्फ मानव को पूर्ण रूप में मिली है। लेकिन क्या हम अभिव्यक्ति की इस शक्ति का सही उपयोग कर पाते हैं? यह प्रश्न हमें स्वयं से पूछना चाहिए।

हो सकती हैं कई समस्याएंः सामान्य तौर पर अपनी बात कहना या फिर कुछ बोलना ही अभिव्यक्ति करना कहा जाता है। वहीं कुछ नहीं बोलना मतलब चुप रहना। हालांकि किसी मामले में चुप रहना भी अभिव्यक्ति का ही एक रूप माना जाता है, लेकिन जब जरूरत हो तब अपनी बात, विचार व्यक्त न करना, कई पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं को जन्म दे सकता है। यही नहीं हमेशा चुप्पी साधे रखना मानसिक रोग की भी वजह बन सकती है। हर इंसान के जीवन में ऐसे अवसर अकसर आते रहते हैं, जब उसे चुप रहना पड़ता है। लेकिन क्या हमेशा चुप रहना, उसके आस-पास के परिवेश के लिए उचित होता है? यह प्रश्न ही यहां सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण है, जो चुप्पियों को जन्म देता है। ऐसी चुप्पियां हमें भारी नुकसान पहुंचाती हैं। हमें अंदर से धीरे-धीरे तोड़ती जाती हैं। हमें पल-पल कमजोर करती रहती हैं। सच्चाई यह है कि जरूरत से ज्यादा चुप्पियां, हमें प्रतिपल दीमक की तरह खोखला करती रहती हैं।

हमेशा ना रहें खामोशः प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' का प्रसिद्ध कथन है, 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?' यह कथन उचित समय पर चुप्पियों को तोड़ने का बल देता है,

वहीं यह संदेश भी देता है कि सही बात को बोलना ही चाहिए। भले ही छोटा-मोटा बिगाड़ हो जाए। लाख कोशिशों के बाद भी, एक न एक दिन कितनी भी बड़ी चुप्पी हो उसे तोड़ना ही पड़ता है, नहीं तो वह चुप्पी आपको तोड़ देगी।

हो सकते हैं महाविनाशः चुप्पी के कारण महाभारत जैसे युद्ध तक हो सकते हैं। दुर्योधन और दुःशासन के अनाचार के समय अगर भीष्म, द्रोणाचार्य और धृतराष्ट्र समेत दरबार में उपस्थित अन्य लोगों ने चुप्पी तोड़ दी होती, अनाचार को रोकने के लिए आवाज उठाई होती तो महाभारत कभी नहीं होता। इसी तरह धर्मराज युधिष्ठिर ने अपनी माता कुंती को महाभारत युद्ध के बाद कहा था, 'माता, कर्ण से जुड़ा सत्य आपने छुपाकर बहुत बड़ी गलती कर दी।'

चुप्पी साधने के कारणः चुप्पी साधने के अनेक कारण हो सकते हैं। हम डरते हैं कि हमारे बोलने से कोई नुकसान ना हो जाए। वह फिर मानव संबंधों का मामला हो या फिर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि से जुड़े मामले हों। हमारे सत्य बोलने से किसी को बुरा लग सकता है और हम अपने संबंधों को बिगाड़ना नहीं चाहते, किसी को नाराज नहीं करना चाहते। वास्तव में सत्य डरावना या फिर बुरा नहीं होता है। लेकिन हम सत्य की सुंदरता देख नहीं पाते। इसी सत्य की शक्ति के स्वरूप हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में लिखते हैं, 'सत्य के लिए, किसी से भी न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।' यह डर ही हमको बहुत सी बातें ना कहने के लिए विवश करता है कि चुप रहो। यह चुप रहना ही धीरे-धीरे चुप्पियों का बड़ा रूप ले लेता है और हमारे अंदर डर का एक मकड़जाल बन जाता है। हम यथार्थ से भागने लगते हैं।

बढ़ रही हैं जीवन में चुप्पियांः वर्तमान दौर में मोबाइल और इंटरनेट जैसी तकनीकी ने भी हमें चुप्पी और संवादहीनता की ओर बढ़ाया है। परिवार में हर कोई इन्हीं में व्यस्त रहता है। जहां संवाद नहीं वहां जीवन और समाज आगे नहीं बढ़ सकता है। प्रसिद्ध संत तरुण सागर कहते हैं, 'समाज, परिवार और आपसी संबंधों से कभी संवाद बंद मत करो। जिस दिन आपने संबंधों में बोलना बंद किया, उस दिन से आपके संबंध धीरे-धीरे टूटना शुरू हो जाएंगे। इसलिए बोलना कभी बंद मत करना।' *

गजल
वसीम अहमद

करार आने लगा है

जो कुछ-कुछ एतबार आने लगा है
तो इस दिल को करार आने लगा है
जैसे-जैसे है उनसे अपनत्व जागा
मुसलसल उनपे प्यार आने लगा है
कि जब से घर में दर्पण आ गया है
उन्हें करना सिंगार आने लगा है
परस्पर दिल्लगी जब से बढ़ी है
तो रिश्तों में सुधार आने लगा है
हूं जब से उनको अपना मान बैठा
मेरे दिल को करार आने लगा है।
निगाहों को निगाहें पढ़ रही हैं
मुसलसल एतबार आने लगा है

व्यंग्य
सूर्यकुमार पांडेय

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो।

निलंबन में मजा है

वह सरकारी काम, काम नहीं होता, जो लंबित न रहे और वह सरकारी अफसर, अफसर नहीं, जो नौकरी में एक-दो बार निलंबित न रहे। सस्पेंड होना बुरा नहीं है। बुरा होता है, निलंबित होकर फटाफट बहाल हो जाना। निलंबित हुए बिना महंगाई भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता आदि बहुत सारे भत्ते मिल सकते हैं, मगर निलंबन भत्ता नसीब नहीं हो सकता।

जिनका काम सूखी तनख्वाह से चल जाता हो, वे फिक्र न करें! किंतु जो सतत सेविंग में विश्वास रखते हैं, निलंबन उनके लिए राजकीय वरदान है। इसीलिए मूरख रोते हैं और ज्ञानी फरमाते हैं, काम विलंबित करो, निलंबित हो जाओ! फिर कोई और पार्ट टाइम कमाई वाला काम करो। मेरे एक डॉक्टर मित्र हैं। अपने सीनियर अफसर से जान-बूझकर पंगा ले बैठे। सस्पेंड हो गए। अब शान से प्राइवेट प्रैक्टिस झाड़ रहे हैं। विभाग ने हर मुमकिन कोशिश की कि वह बहाल हो जाएं, वह खुद ही मुकर गए। सस्पेंशन रस का स्वाद उनके मुंह लग चुका है।

वह जानते हैं, सरकार दयालु है। एक-न-एक दिन पाई-पाई जोड़कर बुढ़ापे के वक्त उनकी चारपाई पर धर जाएगी। अब वह अपने उसी सस्पेंडक सीनियर अफसर को मासिक रूप से बंधी रकम पहुंचाते हैं। इसलिए नहीं कि बहाल हो जाएं, बल्कि इसलिए कि निलंबन बरकरार रहे। इस भांति दोनों सुखी और संपन्न हैं। डॉक्टर साहब की प्राइवेट प्रैक्टिस चल रही है, बड़े साहब की पब्लिक प्रैक्टिस। पारस्परिक सद्भावना सुदृढ़ है। जनसेवा और राजसेवा साथ-साथ चलायमान हैं।

मेरे एक और मित्र बड़े अफसर हैं। ऊंची पकड़ के चलते बरसों से एक ही जिले में अटके हुए हैं। उनके पास तरह-तरह के तिकड़मी डंडे हैं। पर वह पूरे जिले को एक ही डंडे से हांकते हैं। स्वभाव से मृदु हैं। अंदाज दोस्ताना है। मैं अकसर वार्तालाप की तलब उठने पर अपनी शामें जाया करने उनके सरकारी अजायब खाने पर पहुंच जाया करता हूं।

उस रोज गया, तो उनका चपरासी चौंकता हुआ बोला, 'अरे, आपको नहीं मालूम, अपने साहब तो हसबैंड होइ गए!'

अब चौंकने की बारी मेरी थी। मैं जानता था, साहब कुंआरे हैं। न सगाई, न न्यौता, न दावत!

यह साहब हसबैंड कब हो गए? दिमाग पर जोर डाला, तो समझ में आया कि यह साहब हसबैंड नहीं, सस्पेंड हो गए हैं। और सच भी यही है, हसबैंड ओर सस्पेंड होने में कोई खास फर्क नहीं होता। ये दोनों ही हो जाने के बाद आमदनी का एक हिस्सा किसी और की भेंट हो जाया करता है। तब कमाई के नए जरिए तलाशने ही पड़ जाते हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

संवेदना से भरी लघुकथाएं

अलका 'सोनी' की लघुकथाएं और कविताएं पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। सरल-सहज लहजे में वे जीवन की सूक्ष्म संवेदनाओं को अपने लेखन में व्यक्त करती हैं। हाल में छपकर आए उनके लघुकथा संग्रह 'हवा में बनती हैं नई जगहें' की लघुकथाओं में भी इसकी बानगी देखी जा सकती है। 'टूटा तारा' लघुकथा के जरिए लेखिका ने शहरी जीवनशैली की विडंबनाओं और उसके फलस्वरूप नई पीढ़ी की प्रकृति से बढ़ती दूरी को मार्मिक तरीके से उभारा है। इसी तरह 'जिंदगी का डिस्काउंट' लघुकथा में भी आधुनिक जीवनशैली में बिसरती जा रही खुशी और अपनेपन की परिभाषा पर प्रभावी तरीके से कटाक्ष किया गया है। 'पापा का कोना' लघुकथा भी बहुत हौले से हमारी निर्जीव होती जा रही संवेदना को स्पर्श करती है। इसमें नई पीढ़ी फादर्स डे मनाने के लिए इस कदर उत्साहित होती है कि उसे पुरानी पीढ़ी के अपने पिता ही सेलिब्रेशन में मिसफिट लगने लगते हैं और उनको किसी कोने में बैठने को कह दिया जाता है। कहने की जरूरत नहीं कि ये लघुकथाएं, हमें हमारे समय का प्रतिबिंब, बगैर किसी लाग-लपेट के दिखाने में सक्षम हैं। *

पुस्तकः हवा में बनती हैं नई जगहें (लघुकथा संग्रह), **लेखिकाः** अलका सोनी, **मूल्यः** 150 रुपए, **प्रकाशकः** मेधा बुक्स, दिल्ली

प्राचीन-अनूठी बादामी गुफाएं

कर्नाटक राज्य के उत्तरी भाग के बागलकोट जिले में ऐतिहासिक बादामी नगर में स्थित हैं बादामी गुफाएं और मंदिर। इन गुफाओं का न केवल पौराणिक बल्कि ऐतिहासिक महत्व भी है। इन गुफाओं में मौजूद प्रतिमाएं चालुक्य वंश की शिल्पकला का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जो इतिहासप्रेमी पर्यटकों को मोहित कर लेती हैं।

दर्शनीय स्थल / जगत नारायण भारद्वाज

अगर आप इतिहासप्रेमी पर्यटक हैं तो आपको एक बार कर्नाटक के बादामी नगर में स्थित प्राचीन गुफाओं और मंदिरों को जरूर देखना चाहिए। इन गुफा-मंदिरों में मौजूद प्रतिमाएं, छठी-सातवीं सदी में यहां शासन करने वाले चालुक्य शासकों के दौर की उत्कृष्ट शिल्प कला का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।

पौराणिक मान्यता: पौराणिक मान्यता के अनुसार कर्नाटक का बादामी नगर, महाभारतकालीन असुर राजा वातापी की राजधानी हुआ करती थी। पौराणिक काल के विंध्याचल पर्वत के दक्षिण में स्थित इस दंडकवन में अगस्त्य ऋषि और लोपामुद्रा वास किया करते थे। यहीं पर वातापी और इलविल दो भाई अपनी संजीवनी विद्या का दुरुपयोग करके ऋषि-मुनियों को तंग करते और कई बार उन्हें मार भी देते थे। एक बार अंजाने में इन दोनों भाइयों ने अगस्त्य ऋषि पर भी आघात करना चाहा। इस पर अगस्त्य ऋषि ने अपने तपोबल से वातापी को उदरस्थ कर नष्ट कर दिया और दंडक वन को उनके अत्याचारों से मुक्त कर दिया। तभी से इसे अगस्त्य तीर्थ भी कहा जाने लगा।

ऐतिहासिक महत्ता: सन 547-757 तक बादामी नगर, चालुक्यवंशी राजाओं की राजधानी रही है। यहां के पराक्रमी सम्राट पुलकेशिन द्वितीय ने ही उत्तर भारत के सम्राट हर्षवर्धन को पराजित किया था। इसी सम्राट पुलकेशिन के पुत्रों मंगलेश और कीर्तिवर्मन ने यहां के पर्वतों को काटकर गुफा और मंदिरों का निर्माण कराया था। वही प्राचीन गुफाएं और मंदिर, बादामी गुफाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मौजूद हैं प्राचीन प्रतिमाएं: यहां प्रमुख रूप से चार गुफाएं हैं। इन 4 गुफाओं में पहली गुफा हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित है, जिसे नटराज गुफा कहा जाता है। इसमें अर्धनारीश्वर, हरिहर रूप और 18 भुजाओं वाली नटराज की प्रतिमा है, जो देश में अन्यत्र नहीं है। नटराज की मूल प्रतिमा, जो तमिलनाडु के चिदंबरम में है, में भी 16 हाथ हैं। इस गुफा में एक मूर्ति ऐसी भी है, जिसे एक ओर से ढंकने पर हाथी और एक ओर से ढंकने पर नंदी की प्रतिमा दिखाई देती है। इन गुफाओं की एक विशेषता यह भी है कि यहां पर प्रतिमाओं के साथ ही शिल्पकारों के नामों को भी उकेरकर उन्हें अमर कर दिया गया है।

एक अन्य गुफा भगवान विष्णु को समर्पित है। इस गुफा में भूदेवी के साथ वराह और वामन अवतार की विशाल प्रतिमाएं बनी हैं। समुद्रमंथन, कृष्णलीला और अन्य पौराणिक आख्यानों के दृश्य भी बहुत सुंदरता से इस गुफा में उकेरे गए हैं। गुफाओं के विशाल स्तंभों पर सुंदर और महीन कलात्मक कारीगरी की गई है। ये कलाकारी इतनी मोहक है कि जिन्हें स्थानीय साड़ियों के निर्माता भी ऐसी डिजाइन की साड़ियां बनवाते हैं। गुफा की ऊपरी छत पर ऐसे स्वास्तिक बने हैं, जिनका प्रारंभ और अंत का भी आभास नहीं होता है। आपने शेषनाग पर शयन करते भगवान विष्णु की प्रतिमा तो देखी होगी लेकिन शेषनाग पर विराजित भगवान विष्णु की प्रतिमा आप यहीं पर देख पाएंगे। यहां 578 ईसवी में निर्मित कन्नड़ लिपि में लिखा गया एक शिलालेख भी है। इसमें मंगलेश द्वारा एक गांव को दान में दिए जाने का उल्लेख है। तीसरी गुफा भी भगवान शिव को समर्पित की गई है। जबकि चौथी गुफा में जैन तीर्थंकरों की विशाल मूर्तियां बनी हैं। इसमें भगवान वर्धमान, महावीर, पार्श्वनाथ तथा बाहुबली की सुंदर प्रतिमाएं सुशोभित हैं।

कुछ ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं कि चालुक्य वंश के शासकों ने पहले शैव, वैष्णव और फिर जैन पंथ को अपनाया। इसीलिए इन गुफाओं में इनकी प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। यह प्राचीन काल में धार्मिक समन्वय का सशक्त उदाहरण है। शाम के समय में इन गुफाओं की शोभा देखते ही बनती है। इन गुफाओं के कारण ही बादामी नगर विश्व में प्रसिद्ध हुई है। यह स्थल पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है।

अन्य दर्शनीय स्थल: इन बादामी गुफाओं के नीचे अगस्त्य तालाब के दाहिनी ओर आगे चलने पर खंडहरों के प्रतीक आज भी मिलते हैं। यहां पर अनेक चलचित्रों का फिल्मांकन भी हुआ है। गुफाओं के नीचे आने पर अगस्त्य तालाब के किनारे प्राचीन सूर्य मंदिर है। तालाब के एक कोने पर भगवान शिव को समर्पित द्रविड़ शैली में बना भूतनाथ मंदिर समूह है, जिसे 7वीं सदी में बादामी चालुक्यों द्वारा बनवाया गया था। यहां 12वीं सदी में कल्याणी चालुक्यों द्वारा मल्लिकार्जुन मंदिर समूह का निर्माण कराया गया था। भगवान विष्णु और शिव को समर्पित यह मंदिर भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इनके निर्माण की शिल्पकला में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। पास में ही एक भैरव मंदिर है, जिसकी चट्टान पर कई पौराणिक चित्र उकेरे गए हैं। यहीं से चार किमी की दूरी पर बादामी चालुक्यों की कुलदेवी बनशंकरी देवी का मंदिर है, जिसे मां पार्वती का अवतार माना जाता है। इसकी स्थापना अगस्त्य ऋषि ने की थी। मंदिर के पास में ही दर्शनार्थियों के ठहरने की व्यवस्था भी है। यहां गर्मी के मौसम को छोड़कर पूरे वर्ष में कभी भी जाया जा सकता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / अतुल मलिकराम

फील्ड कोई भी हो, बतौर टीम लीडर काम करने की ख्वाहिश प्रायः सभी को होती है। लेकिन टीम लीडर के रूप में सक्सेसफुल होने के लिए अपने काम में एक्सपर्ट होने के साथ ही आपके अंदर कुछ लीडरशिप क्वालिटीज का होना भी जरूरी है। क्या हैं वो क्वालिटीज, जानिए।

ये क्वालिटीज बनाएंगी सक्सेसफुल टीम लीडर

महात्मा गांधी की इस उक्ति 'आप खुद के भीतर वह बदलाव लाएं, जो आप लोगों में देखना चाहते हैं।' को अच्छे लीडरशिप के सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक के रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। एक अच्छे लीडर में कुछ मूलभूत गुणों का होना आवश्यक है। आत्मविश्वास, संचार कौशल, दूरदर्शिता, निर्णय क्षमता, ईमानदारी आदि गुणों की अपेक्षा एक टीम लीडर से की जाती है। एक अच्छा लीडर ऐसे निर्णय लेता है, जो उसकी टीम या संगठन के हित में हो।

पॉजिटिव एटिट्यूड: एक टीम लीडर के रूप में जरूरी है कि आप अपना एटिट्यूड हमेशा पॉजिटिव रखें। आप अपने टीम मेंबर्स को आगे बढ़ने में हमेशा मदद करें। आपके डिसिजंस ऐसे होने चाहिए, जिसे आपकी टीम बेझिझक स्वीकार करती हो। एक अच्छे टीम लीडर के रूप में आपको अपनी टीम की हर जरूरत की जानकारी होनी चाहिए। साथ ही टीम मेंबर्स के हार्ड वर्क और अचीवमेंट्स के लिए उन्हें रिवॉर्ड भी जरूर देना चाहिए। एक टीम लीडर के रूप में विश्वास रखें कि आपकी टीम मजबूत है, यहां हर कोई अपनी भूमिका अच्छे से निभाना जानता है और अपना टार्गेट अचीव करने की क्षमता रखता है।

बढ़ाएं टीम मेंबर्स का हौसला: एक अच्छे टीम लीडर को चाहिए कि वह अपने टीम मेंबर्स को, अपने कुलीग्स को हमेशा मोटिवेट करता रहे। आगे बढ़कर नेतृत्व करने का गुण या सार्थक नेतृत्व हमेशा ही लीडर की परछाई के समान साथ-साथ चलता है। एक लीडर के रूप में आपका पॉजिटिव बिहेवियर और लीडरशिप टीम मेंबर्स को अधिक गहराई से और पूरी तरह से बदलने की ताकत रखता है। यदि आप चाहते हैं कि आपकी टीम अधिक सकारात्मक हो, तो सबसे पहले आपको सकारात्मक रवैया अपनाना होगा। यदि आप चाहते हैं कि टीम मेंबर्स अपने काम को बिना किसी गलती के बेहतरी से पूरा करें, तो आपको उनके ऊपर विश्वास रखना होगा और उनके भीतर आत्मविश्वास जगाना होगा। उनकी कम्युनिकेशन स्किल्स और अपीयरेंस आदि पर विशेष तौर पर ध्यान दें और बेझिझक उन्हें सही सलाह देते रहें। साथ ही आपको चाहिए कि आप उनकी मदद करें और उनका हौसला बढ़ाते रहें।

स्वयं बनें उदाहरण: अगर आप चाहते हैं कि आपके टीम मेंबर्स समय से कार्यस्थल पर आएं और अपना हर काम समय पर पूरा करें, तो पहले आपको स्वयं समय से पहले या समय से वर्कप्लेस पर आने की आदत डालनी चाहिए। आप उन्हें वक्त की पाबंदी के फायदे बताएं। अपना और अपनी सफलता का उदाहरण देकर उन्हें समझाएं। याद रखिए, सफल नेतृत्व के तीन सबसे कारगर सिद्धांत हैं- उदाहरण, उदाहरण और उदाहरण। आप अपनी टीम के लिए कितना बड़ा और प्रभावी उदाहरण बन सकते हैं या पेश कर सकते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। लेकिन यकीन मानिए, आपके ऐसा करने का आपकी टीम पर बहुत पॉजिटिव इफेक्ट पड़ेगा। *

चिंता / के.पी. सिंह

विलुप्ति की कगार पर सोन चिरैया

सोन चिरैया यानी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, भारत के समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा रही है। यह पक्षी मुख्य रूप से राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात के कच्छ क्षेत्र में और कर्नाटक व आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में पाए जाते हैं। कभी बहुतायत में पाई जाने वाली सोन चिरैया धीरे-धीरे लुप्त होने की कगार पर है।

अनोखी शारीरिक संरचना: सोन चिरैया का वैज्ञानिक नाम 'अर्देवोटिस निग्रिसेप्स' है। इसे हिंदी में सोन चिरैया, मराठी में माढोक और राजस्थानी में गोडावण कहते हैं। सोन चिरैया लगभग एक मीटर ऊंची होती है, इनमें नर का वजन आमतौर पर 11 से 15 किलो होता है, जबकि मादा 4 से 7 किलो की ही होती है। इसके सिर के ऊपरी भाग में एक काली टोपी नुमा संरचना होती है। गर्दन स्पष्ट रूप से भूरे रंग की होती है। यह मानसून के दौरान प्रजनन करती है। नर सोन चिरैया में प्रजनन काल के दौरान गले पर पाउच जैसी संरचना उभर आती है। नर, मादा को बुलाने के लिए अपने पाउच से एक विशेष किस्म की आवाज निकालता है। सोन चिरैया सुबह और शाम के समय सक्रिय रहती है। दिन के समय यह प्रायः निष्क्रिय रहती है।

अत्यंत संकटग्रस्त: चिंताजनक बात यह है कि गीतों, कविताओं और लोककथाओं की शान रही भारत की यह खास चिड़िया लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई है। आईयूसीएन की रेड डाटा लिस्ट में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को अत्यंत संकटग्रस्त प्रजाति की श्रेणी में रखा गया है।

लुप्त होने के कारण: सोन चिरैया के लुप्त होने के अनेक कारण हैं। पहले इसका आवास घास के मैदानों और खेतों के बीच होता था, लेकिन अब घास के मैदान और खेत कम होने से इसके आवास की समस्या पैदा हो गई है। एक कारण यह भी है कि यह साल में केवल एक अंडा देती है और उसे भी जमीन पर देती है, जिसे आमतौर पर कुत्तों, लोमड़ियों या अन्य पशुओं द्वारा नष्ट कर दिया जाता है। अपनी कमजोर दृष्टि के कारण ये कांटों, बिजली के तारों आदि में फंसकर मरे जाते हैं।

संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयास: सोन चिरैया के संरक्षण के लिए आईयूसीएन, केंद्र एवं राज्यों द्वारा विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। मसलन, इसके शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया है। जैसलमेर के सुधासरी और रामदेवरा में इन्हें सुरक्षित आवासों में रखकर प्रजनन करवाया जाता है। इन सबके अलावा एनजीओ, वैज्ञानिक और स्थानीय समुदाय के लोग भी सोन चिरैया के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। *

लाइफस्टाइल / शिखर चंद जैन

बेहतर शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद बहुत जरूरी है। इसीलिए दुनिया भर में लोग अच्छी नींद के लिए तरह-तरह की तरकीबें अपनाते हैं।

अच्छी नींद के लिए अजब-गजब उपाय

कई शोध ऐसे हो चुके हैं, जिनमें अच्छी नींद को मानसिक और शारीरिक सेहत के लिए बेहद जरूरी बताया गया है। अच्छी नींद के लिए चिकित्साविज्ञानी तरह-तरह के उपाय भी बताते रहे हैं, जैसे अंधेरे कमरे में सोना, ठंडे बेडरूम में सोना, बेड टाइम पर स्क्रीन से दूर रहना, रेग्युलर एक्सरसाइज करना आदि। लेकिन इन सब से हटकर दुनिया के विभिन्न देशों में लोग अच्छी नींद के लिए कुछ अलग तरह के उपायों को भी अपनाते हैं।

सोने से पहले पैर धोना: चीन में अच्छी, लंबी और गहरी नींद के लिए लोग गर्म पानी में पैर डुबोते हैं और एक्सफोलिएशन भी करते हैं। इससे हाइजीन के साथ-साथ ब्लड सर्कुलेशन भी दुरुस्त होता है और ब्लड वेसल्स भी ब्लॉक नहीं होती हैं। पैर गर्म रहने और बॉडी टेंपरेचर कम होने से नींद जल्दी आती है। यहां कुछ लोग फुट मसाज और स्पा ट्रीटमेंट लेते हैं। अरोमाथेरेपी लेते हैं और पैरों में गरम तौलिया भी लपेटते हैं। इससे उनकी दिन भर की थकान दूर हो जाती है और सुकून की नींद आती है।

कपल्स लेते हैं स्लीप डाइवोर्स: अमेरिका में अच्छी नींद के लिए कपल्स स्लीप डाइवोर्स का आइडिया अपनाते हैं। इसके तहत पार्टनर अलग-अलग बेड पर सोते हैं। कई कपल तो अलग-अलग रूम में भी सोते हैं ताकि नींद में खलल न पड़े।

पेट्स के साथ सोना: एक सर्वे के मुताबिक कनाडा के डॉग ऑनर्स में से कम से कम 75 फीसदी लोग अपने कुत्ते के साथ बेडरूम में सोना पसंद करते हैं, जबकि बिल्ली पालने वालों में से कम से कम 50 फीसदी लोग बिल्लियों को साथ लेकर सोते हैं। अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूके में कम से कम 65 फीसदी लोग अपने पालतू के साथ सोते हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि अपने पालतू पशुओं के साथ सोने से अच्छी और बेफिक्र नींद आती है। यूनिवर्सिटी आफ टोरंटो में इवोल्यूशनरी एंथ्रोपोलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर डेविड सैमसंग कहते हैं कि डॉग का साथ इंसान को सुरक्षा का एहसास देता है। यही वजह है कि अपने पेट डॉग के साथ लोग निश्चिंत और बेफिक्र होकर सोते हैं।

तकिए के नीचे डॉल रखकर सोना: ग्वाटेमाला में पुरानी परंपरा है कि लोग अपने तकिए के नीचे एक छोटी-सी डॉल रखकर सोते हैं, जिसका नाम है- वरी डॉल। मान्यता है कि वरी डॉल लोगों की चिंता या डर को दूर करती है। इससे उन्हें काफी कंफर्ट महसूस होता है। कई मनोवैज्ञानिकों और स्लीप एक्सपर्ट्स द्वारा किए गए अध्ययन में पता चला है कि इन वरी डॉल्स की उपस्थिति से लोगों का एंजायटी लेवल काफी कम हो जाता है, जिससे उन्हें अच्छी नींद आती है। *

हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में मैडी के नाम से पॉपुलर एक्टर आर. माधवन की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' 11 जुलाई को रिलीज हो रही है। इस अलग-सी रोमांटिक फिल्म को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इसके लिए उन्हें कैसी तैयारियां करनी पड़ीं? इस फिल्म, करियर और पर्सनल लाइफ से जुड़ी बातें आर. माधवन से।

मनोरंजन का कामयाब जरिया बन गया है ओटीटी: आर. माधवन

मुलाकात / पूजा सामंत

आर. माधवन हिंदी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में समान रूप से एक्टिव हैं। वे एक अच्छे एक्टर होने के साथ-साथ सहज, मिलनसार और डाउन टु अर्थ इंसान भी हैं। वर्ष 2001 में रिलीज 'रहना है तेरे दिल में' बतौर लीड एक्टर माधवन की पहली हिंदी फिल्म थी। हमेशा चुनिंदा फिल्मों में नजर आने वाले माधवन, नेटफ्लिक्स की रोमांटिक फिल्म 'आप जैसा कोई' में फातिमा सना शेख के साथ नजर आएंगे। इस फिल्म को निर्देशित किया है विवेक सोनी ने। पेश है आर. माधवन से इस फिल्म और करियर पर हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आपकी फिल्म 'आप जैसा कोई' रिलीज हो रही है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताइए। इस रोमांटिक फिल्म को करने के पीछे क्या वजह रही?

लेखक-निर्देशक विवेक सोनी ने जब मुझे फिल्म की कहानी सुनाई तो मुझे इस प्रेम कहानी का अनोखापन बहुत पसंद आया। प्रेम के रिश्ते में लड़का-लड़की दोनों एक ही लेवल पर होते हैं। न लड़का खुद को ग्रेट समझे, न लड़की। यह इक्कीसवीं सदी की प्रेम कहानी है। बिल्कुल इस दौर की कहानी। प्रेम के रिश्ते में लड़की अगर प्यार की पहल करे तो क्या बुराई है? फिल्म का हीरो यानी मैं संस्कृत सिखाने वाला प्रोफेसर हूं। मेरी शादी 40 की उम्र तक नहीं होती है। मेट्रीमोनियल वेबसाइट पर मेरी मुलाकात एक युवती (फातिमा सना शेख) से होती है, जो काफी मॉडर्न खयालात की है। उसे मेरे घर के लोग मना कर देते हैं। फिर क्या होता है? क्या हमारा रिश्ता आगे बढ़ता है? इसके इर्द-गिर्द फिल्म की कहानी घूमती है। मुझे यह प्लॉट, मेरा किरदार (श्रीरेणु) सब बहुत पसंद आया।

श्रीरेणु का किरदार निभाने के लिए आपको किस तरह की तैयारियां करनी पड़ीं?

मेरी रियल एज 55 साल है। लेकिन फिल्म में मेरा किरदार श्रीरेणु 40 के आस-पास का है। मुझे अपनी उम्र से 15 वर्ष कम का दिखना था। इसके लिए मैंने जिम जाकर काफी वर्कआउट किया। स्क्रीन पर उम्र कम दिखे इसलिए मुझे अपनी दाढ़ी हटानी पड़ी, क्लीन शेव रखनी पड़ी। हालांकि मैं अपना दाढ़ी वाला लुक बदलना नहीं चाहता था। मेरे लिए यह बड़ा बदलाव था। फिल्म में मेरे कैरेक्टर की साइकोलॉजी को समझना था। कुल मिलाकर मुझे इस कैरेक्टर के लिए खुद को तैयार करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

'आप जैसा कोई' के एक दृश्य में आर. माधवन और फातिमा सना शेख

इस फिल्म में अधेड़ उम्र के पुरुष का प्यार दिखाया गया है। आपकी नजर में क्या समाज ऐसे प्यार को स्वीकार करता है?

समाज का क्या है, वो तो हर कंडीशन में कुछ न कुछ कहता ही रहता है। दंपति में उम्र का फासला ज्यादा हो तो दिक्कत, उम्र एक सी हो दोनों की तो भी कहने वाले कहते रहेंगे, पति-पत्नी की हाइट में बहुत फर्क हो तो भी कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना। लेकिन मेरा मानना है कि अब सामाजिक परिवर्तन हो रहा है, स्वीकार्यता बढ़ रही है।

सुना है, 'आप जैसा कोई' फिल्म की शूटिंग के दौरान आप जमशेदपुर स्थित अपने पुश्तैनी घर भी गए थे, कैसा रहा वहां जाने का अनुभव?

जमशेदपुर में मेरा जन्म हुआ था। कई वर्षों तक मेरा वहां जाना नहीं हुआ। जब इस फिल्म की शूटिंग उस इलाके (हुगली) में हो रही थी तो मैं टाइम निकालकर अपने पुश्तैनी घर जमशेदपुर गया। बचपन में जो घर मुझे बहुत बड़ा लगता था, इस बार छोटा नजर आया। जो लोग मेरे पड़ोस में थे, अब उनमें से शायद ही कोई वहां था। मैंने वहां आइसक्रीम, स्वीट्स को एंज्वॉय किया। अपने पुराने घर की ढेर सारी यादों को साथ लेकर मैं वापस आया।

आपने टीवी से डेब्यू किया था। फिर आपने साउथ, हिंदी, अंग्रेजी फिल्मों में काम किया। और अब 'आप जैसा कोई' फिल्म से आप ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एंट्री कर रहे हैं। इस बारे में क्या कहना चाहेंगे आप?

सभी जानते हैं, ओटीटी आज के दौर में मनोरंजन का बेहद कामयाब जरिया है। यहां फिल्में भी आती हैं, डॉक्यूमेंटरी सीरीज और वेब सीरीज भी। अब कलाकारों के लिए यह मायने नहीं रखता कि वे किस प्लेटफॉर्म के लिए काम करते हैं। अच्छे मौके आए तो बॉलीवुड क्या, हॉलीवुड क्या, ओटीटी क्या और टीवी क्या? किस माध्यम के लिए मैं कंटेंट बना रहा हूं यह मेकर को अहसास हो, तो वो उस माध्यम का लाभ उठाकर उम्दा कंटेंट दे सकता है। बहरहाल, मैं इस वर्ष बड़े परदे यानी सिनेमा के लिए भी काम कर रहा हूं। 'दे दे प्यार दे 2' और 'धुरंधर' मेरी दो फिल्में इसी वर्ष रिलीज होंगी। *

मैं ये सब नहीं कर सकता

आर. माधवन इतनी अच्छी एक्टिंग कर लेते हैं लेकिन क्या कुछ ऐसे काम भी हैं, जो वह नहीं कर सकते? पूछने पर वह बताते हैं, 'मैं फूडी हूं इसलिए डाइटिंग नहीं कर सकता। मुझे आंकड़ों से नफरत है। मैं अपने फाइनेंसियल मैटर्स को मैनेज नहीं कर सकता, मेरी पत्नी सरिता यह काम संभालती हैं। सरिता ने मुझे क्रेडिट कार्ड दे रखा है। मैं अपने जरूरी खर्चे क्रेडिट कार्ड से चला लेता हूं। कैश खोने का डर रहता है। मेरे जितने भी बैंक अकाउंट्स हैं, वो सरिता के नाम पर हैं। मेरी हमसफर के अलावा वो मेरी कैशियर, बैंक मैनेजर भी है।'